अमृत विचार

लोक दर्पण

रविवार, 6 जुलाई 2025 www.amritvichar.com

डिजिटल और जातिगत जनगणना पहली बार

किसी भी देश के स्वरूप और विकास के लिए यह जानना बेहद जरूरी होता है कि वहां कौन और कितने लोग किस स्थिति में रहते हैं। इसके लिए लगभग सभी देशों में हर एक दशक के बाद यह देखा जाता है कि किसी इलाके में कितने लोग रहते हैं। उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति कैसी है। कितने लोग पढ़े-लिखे हैं, कौन क्या करता है, कितने लोगों के पास रहने के लिए घर हैं। किसकी सामाजिक और आर्थिक हैसियत कैसी है। लोगों का धर्म, उम्र, लिंग, व्यवसाय, शिक्षा, भाषा, संस्कृति, दिव्यांगता जैसी बातों की भी जानकारी की जाती है। आबादी के बीच से इस तरह के विस्तृत आंकड़े जुटाने की प्रक्रिया ही जनगणना कहलाती है। जनगणना के आंकड़ों का इस्तेमाल सरकारी नीतियां और कल्याणकारी योजनाएं बनाने के लिए किया जाता है। इस लिहाज से दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाले देश भारत की जनगणना सबसे बड़ा और काफी जटिल कार्य है, जो साल 2011 के बाद अब किया जाएगा।

मनोज त्रिपाठी
वरिष्ठ पत्रकार, कानपुर

जनगणना की पूरी प्रक्रिया दो चरणों में लगभग 21 माह चलकर एक मार्च 2027 तक खत्म हो जाएगी। हालांकि इसका विस्तृत डेटा सार्वजनिक होने में इसके बाद छह माह समय और लग सकता है। देश के अधिकतर हिस्सों में जनगणना के लिए पहली मार्च 2027 की रात 12 बजे को आधार तारीख माना जाएगा, जबकि बर्फबारी वाले क्षेत्रों जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में जनगणना की आधार तारीख एक अक्टूबर 2026 तय की गई है। देश में पहली बार डिजिटल जनगणना होगी, जिसमें जातिगत जनणना भी शामिल रहेगी। चूंकि कोरोना महामारी के कारण 2021 में होने वाली जनगणना टाल दी गई थी और अब 2025 में शुरू की जा रही है, इस कारण अब अगली जनगणना का काम साल 2035 में कराया जाएगा। इस बार पिछली जनगणना से 16 साल बाद प्राप्त होने वाला डेटा देश के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य के व्यापक विश्लेषण का अवसर प्रदान करने के साथ तमाम महत्वपूर्ण बिंदुओं पर समग्र जानकारी उपलब्ध कराएगा। इससे देश की युवा आबादी, लिंगानुपात, उम्र संरचना, शिक्षा, आर्थिक हालात, विकास और शहरीकरण जैसे कई प्रकार के पैटर्न का तो पता चलेगा ही, जाति का बिंदु शामिल किए जाने से देश में किस जाति की कितनी आबादी है, इसकी भी जानकारी हो जाएगी।

दुनियाभर में पड़ता है भारत की जनगणना का प्रभाव

भारत की जनगणना के आंकड़ों का प्रभाव दुनिया भर पर पड़ता है। इससे विशेषज्ञों को यह समझने में मदद मिलती रही है कि वैश्विक जनसंख्या कैसे बदल रही है, कहां कैसे अवसर और कहां कितनी चुनौतियां हैं। इसकी वजह यह है कि भारत की आबादी का डेटा वैश्विक अर्थव्यवस्था, समाज और पर्यावरण के लिए भविष्य की नीतियों और रणनीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वैश्विक जनसंख्या अनुमान और रुझानों को प्रभावित करने के साथ इसका इस्तेमाल अध्ययन के लिए भी होता है। भारत की जनगणना से हासिल होने वाली आर्थिक वृद्धि और विकास की नीतियों के डेटा से सीख लेकर अन्य विकासशील देश अपने लिए मॉडल तैयार करते हैं। इसी तरह भारत की विशाल आबादी बड़ा उपभोक्ता बाजार बनाती है। ऐसे में जनगणना का डेटा विदेशी निवेशकों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भारत में निवेश और व्यापार की योजना बनाने में मदद करता है, तो अंतर्राष्ट्रीय सहायता एजेंसियों और दानदाताओं को भारत में लक्षित विकास कार्यक्रमों के लिए धन आवंटित करने का रास्ता दिखाता है।

इसी तरह भारत की बड़ी और युवा श्रम शक्ति वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती है। जनगणना से उपलब्ध श्रम बल, कौशल स्तर और रोजगार पैटर्न की जानकारी वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं और श्रम बाजारों पर गहरा असर डाल सकती है। उदाहरण के लिए, एक बड़ी युवा आबादी वैश्विक श्रम बाजार को प्रभावित करती है, जबकि वृद्ध आबादी स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों पर दबाव डाल सकती है।

जातीय जनगणना से बदल सकती है चुनावों की तस्वीर

आजादी के बाद पहली बार जनगणना के साथ इस बार जातिगत जनगणना भी कराई जाएगी। इससे पहले वर्ष 1931 में जातिगत जनगणना कराई गई थी। इस मर्तबा ओबीसी, एससी, एसटी और सामान्य श्रेणी की सभी जातियों की गणना के साथ उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति जैसे आय, शिक्षा, रोजगार आदि का डेटा भी एकत्र किया जाएगा। यह डेटा सरकारी योजनाओं, आरक्षण नीतियों और सामाजिक न्याय से जुड़ी योजनाओं का आधार बनेगा। केंद्रीय वित्त आयोग राज्यों को अनुदान देने के लिए भी इस तरह के डेटा का इस्तेमाल करता है। इस बार की जनगणना से प्राप्त होने वाला जातीय डेटा सामाजिक-आर्थिक नीतियों और आरक्षण के लिए काफी अहम माना जा रहा है। हालांकि पहले भी जनगणना में अनुसूचित जाति और जनजाति से जुड़ी जानकारी मांगी जाती थी, लेकिन अन्य किसी जाति के बारे में कोई सूचना एकत्र नहीं की जाती थी। माना जा रहा है कि जातीय जनगणना के आंकड़े आने के बाद देश में काफी कुछ बदल जाएगा। सबसे बड़ा बदलाव यह हो सकता है कि आरक्षण की 50 फीसदी सीमा बढ़ा दी जाए। अभी सुप्रीम कोर्ट की बंदिश के चलते आरक्षण 50 फीसदी से अधिक नहीं हो सकता है। ऐसा माना जाता है कि देश में सबसे बड़ा जातीय समूह अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) है। वर्ष 1931 की जनगणना में पिछड़ी जातियों की आबादी 52 फीसदी से अधिक बताई गई थी। ओबीसी को जिस मंडल आयोग की सिफारिशों पर आरक्षण मिला था, उसने भी ओबीसी की आबादी 52 फीसदी होने का आकलन किया था। पिछले वर्ष बिहार के जातीय सर्वेक्षण में ओबीसी की गणना अति पिछड़ा और पिछड़ा वर्ग के रूप में की गई थी। इसके आंकड़ों के मुताबिक दोनों वर्ग की आबादी बिहार में 63.13 फीसदी मिली थी। वर्तमान में ओबीसी के लिए 27 फीसदी आरक्षण लागू है। इसे बढ़ाए जाने को लेकर लगातार दबाव बनाया जा रहा है। कहा जाता है कि एससी-एसटी को आरक्षण देते समय उनकी जनसंख्या देखी जाती है, लेकिन ओबीसी आरक्षण के साथ ऐसा नहीं है। ऐसे में जातीय जनगणना से पता लगेगा कि देश में किस जाति की कितनी आबादी है। इसके बाद ओबीसी जातियां अपनी जनसंख्या के हिसाब से आरक्षण देने की मांग कर सकती हैं।

जातीय जनगणना के बाद संसद और विधानसभाओं की तस्वीर भी बदली सकती है। राजनीतिक दल जिस जाति की जितनी हिस्सेदारी उसकी उतनी भागीदारी का नारा उछालकर न सिर्फ चुनाव में अधिक सीटें दे सकते हैं, बल्कि शासन-प्रशासन और संपत्ति वितरण में भी इसी आधार पर हिस्सा मांग सकते हैं। गौरतलब है कि 1990 में मंडल आयोग की सिफारिशें लागू होने के बाद देश में सामाजिक न्याय की राजनीति करने वाले दलों का उदय हुआ था। हालांकि जातीय जनगणना के अपने नुकसान भी हैं। इससे सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियां पैदा हो सकती हैं। जातीय जनगणना के आंकड़े समाज में नए सिरे से विभाजन की लकीर खींच सकते हैं। इससे समाज में जातिगत विभाजन और गहराने के साथ तनाव भी बढ़ा सकता है।

गोपनीयता की गारंटी देता है जनगणना अधिनियम 1948

देश में जनगणना का काम जनगणना अधिनियम, 1948 के प्रावधानों के तहत किया जाता है। संविधान के अनुच्छेद 246 के अनुसार जनगणना संघ का विषय है। जनगणना में एकत्र जानकारी इतनी गोपनीय होती है कि यह न्यायालयों के लिए भी सुलभ नहीं होती है। इसका डेटा किसी भी तीसरे पक्ष को नहीं दिखाया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति या जनगणना अधिकारी अधिनियम के प्रावधानों का उल्लंघन करता है, तो इसके लिए कानून में दंड का भी प्रावधान है।

153 साल के इतिहास में पहली बार देरी से जनसंख्या सर्वेक्षण

जनगणना के 153 साल के इतिहास में यह पहली बार है कि देरी से जनसंख्या की गणना की जा रही है। भारतीय जनगणना का इतिहास काफी प्राचीन है। ऋग्वेद से पता चलता है कि भारत में 800-600 ईसा पूर्व एक प्रकार की जनसंख्या गणना की जाती थी। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में कौटिल्य द्वारा लिखित 'अर्थशास्त्र' में कराधान के लिए जनसंख्या के आंकड़ों के संग्रहण का उल्लेख मिलता है। मुगल बादशाह अकबर के समय में प्रशासनिक रिपोर्ट 'आइन-ए-अकबरी' में जनसंख्या से संबंधित आंकड़े शामिल किए गए थे। हालांकि एक भारतीय शहर की पहली पूर्ण जनगणना वर्ष 1830 में हेनरी वाल्टर द्वारा ढाका (अब बांग्लादेश) में कराई थी। वर्ष 1849 में अंग्रेज सरकार ने स्थानीय सरकारों को जनसंख्या की पंचवर्षीय गणना का आदेश दिया था। लेकिन पहली जनगणना भारत में वर्ष 1872 में गवर्नर जनरल लॉर्ड मेयो के शासन में हुई किंतु पहली आधिकारिक जनगणना 1881 में ब्रिटिश शासन के तहत जनगणना आयुक्त डब्ल्यूसी प्लोडेन ने करवाई थी। इसके बाद हर 10 साल में जनगणना होने लगी। अब 2021 में होने वाली जनगणना को जनगणना-2025 के नाम से जाना जाएगा। 2021 में जनगणना का काम पूरी तैयारी, बजट जारी करने और करीब 30 लाख लोगों को जनगणना कार्य में लगाने के लिए चिह्नित करने के बावजूद कोविड महामारी के कारण नहीं हो सका था।

पता चलेगा डेढ़ दशक में क्या कुछ कितना बदला

वर्ष 2011 में देश की कुल जनसंख्या एक अरब 21 करोड़ दर्ज की गई थी, जिसके अब डेढ़ अरब का आंकड़ा पार करने का अनुमान लगाया जा रहा है। जनगणना 2011 के अनुसार, 19.96 करोड़ आबादी के साथ उत्तर प्रदेश जनसंख्या के मामले में सबसे बड़ा और 60.76 लाख आबादी के साथ सिक्किम सबसे कम जनसंख्या वाला राज्य था। तब देश में कुल साक्षरता दर 74.04 फीसदी मिली थी। जनसंख्या घनत्व का आंकड़ा 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर निकला था। लिंग अनुपात की दर प्रति 1000 पुरुषों पर 940 महिलाएं दर्ज हुई थी। 2011 की जनगणना के राज्यवार आंकड़ों के मुताबिक केरल में प्रति 1000 पुरुषों पर 1084 महिलाओं के साथ उच्चतम लिंगानुपात मिला था, जबकि हरियाणा में प्रति 1000 पुरुषों पर केवल 877 महिलाओं के साथ भारत में सबसे कम लिंगानुपात पाया गया था। जिलों में महाराष्ट्र के ठाणे जिले की जनसंख्या 1.11 करोड़ के साथ सबसे अधिक और अरुणाचल प्रदेश के जिला दिबांग घाटी में सबसे कम सिर्फ 7,948 आबादी दर्ज हुई थी। साक्षरता के लिहाज से मिजोरम में सेरछिप जिला 98.76 प्रतिशत की साक्षरता दर के साथ सबसे ऊपर था तो उड़ीसा का कोरापुट जिला 49.87 प्रतिशत की साक्षरता दर के साथ सबसे पीछे था। जनसंख्या के मामले में, महाराष्ट्र का मुंबई 1.25 करोड़ आबादी के साथ देश का सबसे अधिक आबादी वाला शहर था।

लोकसभा, विधानसभा सीटों का परिसीमन और महिला आरक्षण

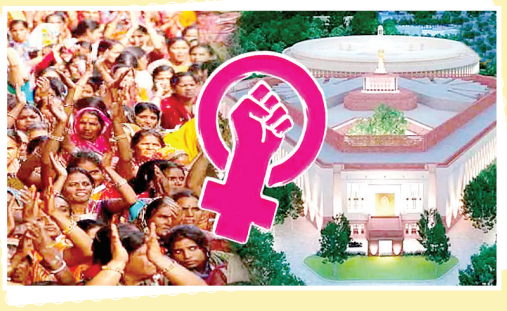

जनगणना के बाद परिसीमन आयोग का गठन करना होगा। इसका असर लोकसभा और राज्य विधानसभा की सीटों के लिए अगले परिसीमन के साथ संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए प्रस्तावित 33 फीसदी आरक्षण पर पड़ेगा। महिला आरक्षण कानून लागू होने के बाद हो रही पहली जनगणना के आंकड़ों के आधार पर परिसीमन की प्रक्रिया शुरू होने पर लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें आरक्षित करनी पड़ेंगी। दरअसल, संविधान के अनुसार प्रत्येक जनगणना के बाद परिसीमन की प्रक्रिया होती रही है। 1951, 1961 और 1971 की जनगणना के बाद परिसीमन की प्रक्रिया की गई थी। हालांकि 1971 की जनगणना के आधार पर जब 1976 में परिसीमन प्रक्रिया हुई तब उत्तर और दक्षिण भारत के बीच विवाद खड़ा हो गया था। इसकी वजह यह थी कि दक्षिण भारत में आबादी धीमी गति से बढ़ रही थी, जबकि उत्तर भारत में इसकी रफ्तार तेज थी। ऐसे में दक्षिण के राज्यों का कहना था कि जनसंख्या नियंत्रण करने के बदले में उन्हें नुकसान उठाना पड़ रहा है। लोकसभा और विधानसभा सीटों की संख्या तय करने में जनसंख्या का आधार उनका प्रतिनिधित्व कम कर रहा है। हालांकि आबादी के आधार पर परिसीमन को लेकर दक्षिण भारत के कुछ राज्यों का विरोध देखते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह कई बार साफ कर चुके हैं कि परिसीमन की प्रक्रिया में दक्षिण के राज्यों की चिंता का पूरा ध्यान रखा जाएगा। वैसे अभी यह भी माना जा रहा है कि जनगणना के अंतिम आंकड़े आने में लगने वाला समय देखते हुए ऐसे कयास हैं कि 2029 के लोकसभा चुनाव में कुछ नहीं बदलेगा, लेकिन उसके बाद के चुनावों में यह आंकड़े परिसीमन का आधार बनेंगे।

इस पद्धति से किया जाता है पूरा काम

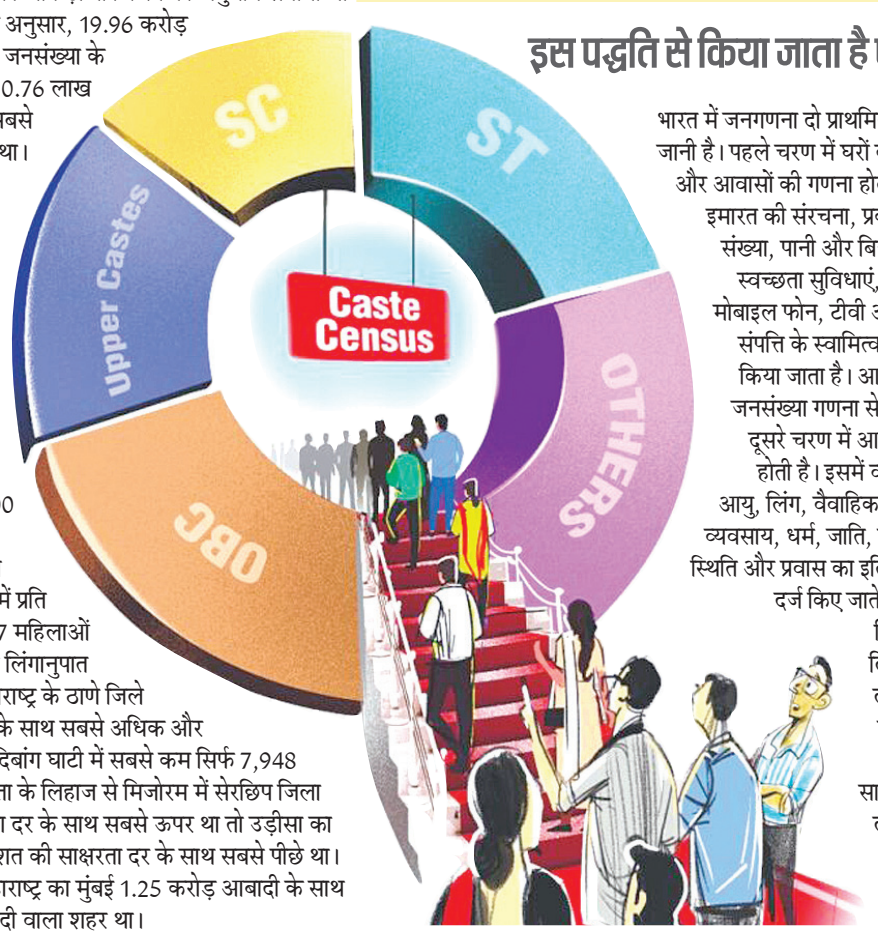

भारत में जनगणना दो प्राथमिक चरणों में की जानी है। पहले चरण में घरों की सूची बनाना और आवासों की गणना होती है। इसमें हर इमारत की संरचना, प्रकार, कमरों की संख्या, पानी और बिजली की पहुंच, स्वच्छता सुविधाएं, ईंधन उपयोग, मोबाइल फोन, टीवी और वाहन जैसी संपत्ति के स्वामित्व का डेटा एकत्र किया जाता है। आवास जनगणना जनसंख्या गणना से पहले होती है। दूसरे चरण में आबादी की गणना होती है। इसमें व्यक्ति का नाम, आयु, लिंग, वैवाहिक स्थिति, शिक्षा, व्यवसाय, धर्म, जाति, विकलांगता की स्थिति और प्रवास का इतिहास जैसे डेटा दर्ज किए जाते हैं। अनुमान है कि इस काम के लिए लगभग 30 लाख से अधिक गणनाकार और पर्यवेक्षकों के साथ लगभग सवा लाख जनगणना कर्मियों को तैनात किया जाएगा।

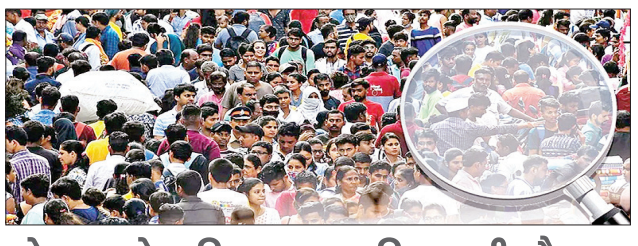

मोबाइल ऐप, रियल टाइम निगरानी और स्व गणना से बढ़ेगी पारदर्शिता

इस बार मोबाइल ऐप, ऑनलाइन स्व-गणना और रियल टाइम निगरानी का उपयोग करके पहली बार पूरी तरह से डिजिटल जनगणना की जाएगी। गणना कर्ताओं के पास जनगणना सॉफ्टवेयर के साथ पहले से लोड किए गए स्मार्टफोन होंगे और घरों को वेब पोर्टल या मोबाइल ऐप के माध्यम से स्वयं गणना करने की अनुमति भी होगी। स्व गणना के तहत परिवार अपना विवरण ऑनलाइन भी भर सकते हैं। इससे गणना करने वाले कर्मियों द्वारा सत्यापन के लिए विशिष्ट आईडी तैयार हो जाएगी। इसे निवासी सत्यापन के लिए गणनाकर्ताओं के समक्ष प्रस्तुत कर सकेंगे। दरअसल, स्व-गणना एक प्रकार की डिजिटल पहल होगी, जो व्यक्तियों को ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) में दर्ज अपनी घरेलू जानकारी तक पहुंचने और उसे अपडेट करने तथा सत्यापित करने की अनुमति प्रदान करेगी। यह प्रक्रिया नागरिकों को सक्षम बनाकर अधिक सुविधा, पारदर्शिता और सटीकता सुनिश्चित करेगी। स्व-गणना प्रक्रिया के लिए नागरिकों को भारत सरकार के रजिस्ट्रार जनरल कार्यालय के आधिकारिक पोर्टल पर जाना होगा। इसी तरह जनगणना के दौरान गणनाकर्ता पहले से लोड किए गए जनगणना ऐप्स के साथ हैंड हेल्ड डिवाइस या स्मार्टफोन का उपयोग करेंगे। इसकी डिजिटल अवसंरचना में मोबाइल ऐप, जियोटैगिंग टूल, क्लाउड-आधारित डेटा अपलोड सिस्टम और रीयल-टाइम डैशबोर्ड शामिल रहेंगे।

शब्द चर्चा

'दम भरना' कहें, 'दम्भ भरना'

अजित वडनेरकर
वरिष्ठ लेखक

'दम भरना' कहें, 'दम्भ भरना'-'दम' यानी सांस, 'दम्भ' यानी ग़ुरूर, अक्सर झूठी शान दिखाने के संदर्भ में हिंदी में 'दम्भ भरना' पद का प्रयोग किया जाता है। यह सही नहीं है। दरअसल 'दम भरना' की तर्ज पर असावधानीवश यह चलन में आ गया है। इसकी वजह से 'दम भरना' का प्रयोग कम हो गया है। कुछ लोग इसे 'दम भरना' का हिंदी रूप भी समझते हैं क्योंकि 'दम' फ़ारसी का है। बात यह है कि 'दम भरना' उस अर्थ में प्रयुक्त नहीं होता जिस रूप में 'दम्भ भरना' को बरता जाता है।

क्षमता से अधिक मूल्यांकन-'दम भरना' यानी हुंकार भरना। यह हुंकार है, अनुकरणात्मक शब्द है। फेफड़ों में एक साथ हवा भरने के बाद की सांस छोड़ने से उत्पन्न ध्वनि। एक साथ सांस तभी भरी जाती है जब बहुत ज्यादा मेहनत की जाए, अधिक वज़न उठाया जाए। प्रकारांतर से इसमें बड़ी जिम्मेदारी लेने की घोषणा का आशय है। "दम भरना", डींग हांकने का पर्याय भी है। किन्तु 'डींग' खुद का क्षमता से अधिक मूल्यांकन करना है। मूलतः दूसरे पक्ष से खुद को ताकतवर साबित करने की बात। दम्भ सिर्फ ज़बानी जोश नहीं वह, हरकतों, क्रियाओं, हावभाव, कुदुम्ब, परिवेश और संस्कार से भी झलकता है।

दम तोड़ना-ग़ौर करें, एक चीज़ ओढ़ी जाती है, एक चीज़ जन्मजात होती है। 'दम' आत्मविश्वास का प्रतीक है। जीवन-विश्वास का प्रतीक है। दम यानी श्वास। जिसे सांस कहते हैं। दम ओढ़ा हुआ गुण या वस्तु नहीं। यह भीतर होता है। जन्मजात होता है। दम छोड़ा जा सकता है, ओढ़ा नहीं जा सकता। दम दिया जा सकता है। इसे भरा जा सकता है। अपने सीने में या दूसरे के सीने में। यह शक्ति, बल, उर्जा है। दम लेना यानी 'सांस लेना' एक निरन्तर प्रक्रिया है। क्रम है, सातत्य है, जीवन का का लक्षण है। इसीलिए दम टूटता भी है। 'दम तोड़ना' मुहावरा दरअसल जीवन के अंत की घोषणा है।

दम्भ बाहरी चीज़ है-तो क्या 'दम्भ भरना' में जो डींग, घमंड, दिखावा या पाखंड का आशय है उसका मुहावरे की तरह प्रकटीकरण ग़लत है! बिल्कुल नहीं। पहले भी कहा है यह दम भरना की तर्ज पर ढल गया। असल मुहावरा है "दम्भ धरना"। कबीर कहते हैं- "आसन मारि डिम्भ धरि बैठे, मन में बहुत गुमाना"। यानी यह जो दम्भ है, वह आसन के होने से है। आसन ही वसन है, वही छत्र है, छाया है, ऐसा मान बैठा है। अब इस विडंबना का अहसास अगर व्यक्ति को हो जाए तब वह स्वयं होकर दम्भ को मन में स्थान देगा! बिल्कुल नहीं।

सायास नहीं, अनायास-थोड़ा सोचा जाए कि नकारात्मक गुण तो दुश्मन भी ख़ुद में नहीं आने देना चाहेगा। कोई ख़ुद में घमंड कैसे 'भर' सकता है! यह संभव है कि अपने दुर्गुणों से हम अपरिचित हो सकते है। इसीलिए कहा जाता है कि अमुक व्यक्ति में घमंड भरा है, दम्भ भरा है, गुरूर भरा है वग़ैरह। कोई ख़ुद के अवगुणों पर गर्व नहीं करता। तो यह जो भरना है, सायास नहीं, अनायास है। भरना सायास क्रिया है। धरना अनायास भी होता है।

बोझ नहीं, गुण-दम्भ भरना मुहावरा दरअसल क्या कहता है! यही न, कि कोई व्यक्ति दर्प से चूर है। उसे अपनी खूबियों, क्षमताओं अथवा अपनी परिवेशगत सामर्थ्य पर अतिरिक्त भरोसा है। यह सब बाहर से आ रहा है। उसने ओढ़ा है। स्वयं पर लादा हुआ है किन्तु जो कुछ भी अनुभूत है, पहचान है। वह बोझ नहीं, गुण होता है। वही स्वभाव है। क्योंकि अन्तर्भूत है।

दम्भ दूसरे को दिखता है-तो किसी का दम्भ से भरा होना, हमारा आकलन है या आरोपित का स्वनिर्मित व्यक्तित्व? ज़ाहिर है, यह हमारा आरोपण है। वह दम्भ से भरा नज़र आता है। व्यक्ति ने दम्भ को सायास नहीं अपनाया बल्कि वह संस्कार, परिवार, कार्य-व्यापार की देन है। इसीलिए लिए "वे अमीरी का दम्भ भरते हैं" नहीं, "वे अमीरी का दम्भ पाले" हैं ज़्यादा सही प्रयोग होगा। दम्भ धारे हैं, दम्भ ओढ़े हैं, दम्भ रखे हैं जैसे प्रयोग सही है। 'दम्भ से भरा' या 'दम्भ भरा है', ये प्रयोग भी सही हैं, मगर 'दम्भ भरना' गड़बड़ है। यहां 'मैं' नहीं, 'वे' की उपस्थिति है। 'अपने' से नहीं, 'उनसे', 'औरों' से मुराद है।

दम यानी भरोसा, विश्वास, आस- आशय चाहे सही हो, मगर देखने में आ रहा है कि लोगों ने 'दम भरना' का प्रयोग कम कर दिया है। उन्हें लगता है कि सही मुहावरा दम्भ भरना है। जबकि इसकी जगह दम्भ रखना, दम्भ धरना, दम्भ पालना, दम्भ होना जैसे पद बरते जाने चाहिए। 'दम' आस्था का नाम है। ताक़त का नाम है। क्षमता का नाम है। किसमें कितना है दम। दम भरना यानी भरोसा होना, विश्वास जताना। ईमान का दम भरना यानी सदाचार की बात पर अडिग रहना। चलते चलते-एक और प्रयोग सांस फूलने के अर्थ में होता है जैसे सीढ़ी चढ़ते हुए छाती में दम भरना। प्रस्तुत चर्चा से यह मिसाल नहीं जुड़ती।

कविताएं/गीत

आंखों में खोया चैन

हूं नदी के पास फिर भी, प्यास से बेचैन।
ज़िंदगी से जूझते अब, बीतते दिन-रैन।

चुभ रही आंखों में उजली धूप।
कांच की किरचें फटकता सूप।

ढूंढ़ता हूं रात की आंखों में,
खोया चैन।
लिख रहा कोई दीवारों पर।

ज़िंदगी बढ़ती अंगारों पर।
उड़ गया पंछी गगन की ओर
ताकते सूने हुए फिर नैन।

क्या पढ़ूं सब पृष्ठ खाली हैं
मंच गुमसुम मौन ताली हैं।

हाशियों पे आ गए बिखराव
चुप्पियों से जूझते फिर नैन।

भीड़ में चलते रहे सब भूलकर।
कौन सोचे, सोच को अनुकूल कर।

चाशनी संग है चुभन लिपटी हुई,
बस चुभन देते सुरीले वैन।

पंकज मिश्र 'अटल'
शाहजहांपुर

मेघदूत

ओ कालिदास के मेघदूत!
प्रेम के
अमर संदेश वाहक बनकर
तुमने तो
विरह की लपटों में झुलसी
विरहिणी की आग को बुझाया है।
आषाढ़ के पहले दिन
अपने रूप-सौंदर्य से
यक्ष के
अभिशापित हृदय को
प्रेम-पयोधि बनाया है।
तुम्हारे
अमृतमय जलकण
बना देते हैं
जड़ को भी चेतन।
खिला देते हैं
पत्थरों में भी फूल
और
कर देते हैं
दिग्दिगन्त को सुवासित।

ओ!
प्राणों के प्राण
जन-जीवन के त्राण!
अब बम की तरह फट जाते हो
जीवन की जगह मौत बरसाते हो।
आखिर क्यों?
क्या तुमने भी
बदल लिया है अपना सब कुछ
आदमी की तरह।

डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र
रामनगर, नैनीताल

वधशाला है तेरा गांव

मंदिर में तुम उसे पूजते
औ 'रस्ते में चीरहरण,
रावण के पापाचारों में
दोषी सोता कुंभकरण।

पत्थर का तो वंदन-पूजन
और मानवी को छलते,
मैला करते उस आंचल को
जिसकी छाया में पलते।

कभी जानकी, कभी द्रौपदी
कभी पद्मिनी रोई है,
तेरे ही कुछ लोभ-पाप से
कहीं अहिल्या सोई है।

कैसे पाषाणी दोषी है
और यह गौतम दूधधुला,
इन्द्र-सभाएं कहां बंद हैं
ओ उद्धारक! प्रश्न खुला।

नहीं सुरक्षित रही कोख में
नहीं सुरक्षित डाली पर,
डरी-डरी हर जगह निर्भया
प्रश्न-चिन्ह है माली पर।
हर आहट में एक त्रास है,
सन्नाटे में भी डर है,
चेहरा-चेहरा लगे दु:शासन
किसे कहे वह रहबर है।

उसे चाहिए पालन-पोषण
नेह-गेह औ शीतल छांव,
डरी-डरी है सोन चिरैया
बधशाला है तेरा गांव।

अशोक मिश्र
जौनपुर

खोटा सिक्का

क्यों सहमा सहमा हूं मैं।
क्या बलि का बकरा हूं मैं।

गोली खाकर ज़िंदा हूं,
गांधी का चरखा हूं मैं।

मंदिर बोला मस्जिद से,
तुमसे कब झगड़ा हूं मैं।

खेल बड़े लोगों का है,
लीक हुआ पर्चा हूं मैं।

रावण सीना ठोक रहा,
बहुमत से जीता हूं मैं।

न्याय खरीदा मैंने भी,
बाइज़्ज़त छूटा हूं मैं।

'ज्ञान' सभी की नज़रों में,
इक खोटा सिक्का हूं मैं।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'
शाहजहांपुर

कहानी

खूबसूरत

श्रुति सुकुमार
लेखिका, बरेली

कितना विचित्र शहर है यह जब से आई हूं तीन दिन से लगातार बारिश ही हो रही है, और बारिश भी ऐसी नहीं की हल्की-फुल्की, ऐसा लग रहा है मानो कोई आसमान से बाल्टिया उलेड रहा हो। जुलाई के महीने में यहां ठंड का एहसास हो रहा था। यह वही शहर है जिससे भारत की खोज हुई थी। जी हां "कालीकट यहीं तो वास्कोडिगामा का जहाज आया था और भारत की खोज हुई, या यू कहे कि भारत का पता पूरी दुनिया को चला।

मैं खिड़की से बारिश को देखे जा रही थी, आंखों को कितना सुकून दे रही थी यह बारिश... कुछ अलग ही थी यह बारिश.. तेज..निरंतर प्रवाह। तभी दीदी हाथ में कॉफ़ी के दो कप लाई, एक मुझे थमा कर पास में ही बैठ गई। कॉफी पीते-पीते और बारिश देखते-देखते मानो मेरी तो समाधि लग गई हो... इतना सुखद एहसास... मैंने दीदी से पूछा, "बारिश में क्या कोई जादू होता है?" दीदी बोली, "हां.. बारिश जादुई तो होती है, तभी तो बारिश की बूंदो से मिट्टी महक जाती है, सीपियां खिल जाती है, और मन मुस्कराने लगता है फिर कुछ देर हम ऐसी बारिश को देखते रहे। "चलो अब उठो ऐसे ही बारिश देखती रहोगी क्या.. पूरा घर फैल रहा है... कपड़े भी नहीं सूखे हैं और घर में कोई सब्जी भी नहीं है.." शायद काम की अधिकता की वजह से दीदी एकदम से भड़क उठी।

दरसल हाल ही में काम के सिलसिले में दिल्ली से कालीकट शिफ्ट हुए थे, और अभी घर ठीक से व्यवस्थित भी ना हो पाया था और बाजार का भी कुछ अता-पता न था और ऊपर से यह बारिश रुकने का नाम ही ना ले रही थी। ऐसे कब तक चलेगा यही सोच कर मैंने छाता उठाया और सब्जी लेने के लिए चल दी। सड़क पर पानी भरा होगा और फिसलन व चिपचिपी होगी यही सोचकर मैं उलझन में थी। पर वाह यहां की प्रवाह प्रणाली! सड़क पर कहीं कोई जल भराव नहीं, कोई गड्ढा नहीं.. सड़क एकदम चकाचक।

मैंने पाया सड़क पर लोगों की भीड़ थी। शहर अपनी सामान्य रफ्तार से ही चल रहा था... यहां बारिश की वजह से कोई रुकता नहीं था... बारिश यहां के लोगों का हिस्सा ही थी। साफ सुथरा शहर, प्रकृति के बीच, कालीकट मेरे मन को भा रहा था... यहां की प्रकृति कितनी खुशनुमा है.. जगह-जगह पर नारियल के ऊंचे-ऊंचे पेड़ और उस पर लटकते बड़े-बड़े नारियल देखते ही बनते थे। शहर पुर्तगाली संस्कृति से प्रेरित था, शहर की ईमारतों में पुर्तगाली संस्कृति की झलक दिखती थी। शहर काफी सुंदर व सुव्यवस्थित लग रहा था। जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ी, मैंने देखा वहां पर कई सब्जी की दुकान लगी हुई थी। मैं एक सब्जी की दुकान पर रुक गई और सब्जियां चुनने लगी। कुछ सब्जियों एकदम अलग ही थी, जिन्हें मैंने उत्तर भारत में कभी नहीं देखा था। मैंने नीचे सब्जी को देखते हुए उसका नाम पूछा,सब्जी वाले ने जो बोला वह मुझे कुछ स्पष्ट ना हुआ, तो दुविधा में मैं उसे देखने लगी, मैं हंसता हुआ बोला "मैम हिंदी हो?" (वहां के लोग उत्तर भारतीयों को हिंदी कहते हैं) "हिंदी थोड़ा-थोड़ा मालूम.. वी स्पीक मलयालम... इंग्लिश चलेगा.." कहते हुए वह मुझ पर हंसने सा लगा। मैंने उसे ध्यान से देखा, सामान्य सी कद काठी, गहरा रंग, मोटी सी मूंछ व बड़े-बड़े दांत। उसने सफ़ेद रंग की बनियान और नीले चेक की धोती पहनी थी, गले में एक लाल रंग का गमछा भी था। वह देखने में अनाकर्षक था व स्वभाव से कुछ गरम मिजाज का लग रहा था। वह मुझे ज्यादा सब्जियां बीनने नहीं दे रहा था वह कह रहा था "बिना छांटे ही आपको सब्जी लेनी होगी मैडम"।

मैंने जल्दी-जल्दी सब्जी खरीदी और मैं वापस लौटने लगी... अब थोड़ा अंधेरा भी छाने लगा था, मैं जल्दी ही घर वापस पहुंचना चाहती थी। तभी पीछे से आवाज आई.. "मैम.. मैम!"

मैंने पीछे मुड़कर देखा वही सब्जी वाला था.. मेरा दिल धक सा हो गया, और मेरे भीतर एक अनचाहा डर कौद गया। मैं तेजी से आगे की ओर बढ़ने लगी, वह भी तेज कदमों से मेरे पीछे आने लगा। मेरी घबराहट और बढ़ गई। उसने फिर से आवाज लगाई, "मैम, योर रिंग" "रिंग" शब्द सुनते ही साहस मेरा ध्यान मेरे हाथ की उंगली पर गया, मेरी उंगली में मेरी सोने की अंगूठी नहीं थी, शायद ऊंगली में ढीली होने की वजह से वहीं गिर गई और वह मुझे मेरी अंगूठी देने के लिए भागा भागा चला आ रहा था.. उसने दूर से ही मुझे देखते हुए हाथ हिलाया और मेरी अंगूठी मुझे दिखाई... और फिर पास आते ही उसने मुझे बहुत ही खुशी व सहजता के साथ मेरी अंगूठी लौटा दी।

मैंने उसका बहुत-बहुत धन्यवाद किया.. पर उसने ऐसे व्यक्त किया मानो कोई खास बात ही ना हुई हो, उसके चेहरे पर ईमानदारी साफ झलक रही थी। मैं मुस्कुरा दी और मेरे मन में एक मीठा सा एहसास हुआ कि सिर्फ यह शहर ही 'खूबसूरत' नहीं बल्कि यहां के लोग भी बेहद ही 'खूबसूरत'हैं। जैसे यहां की प्रकृति ने अपनी पवित्रता व स्वच्छंदता से मुझे मोह लिया वैसे ही यहां के लोगों की ईमानदारी,सच्चाई, पवित्रता व अपनेपन में मुझे आकर्षित कर लिया था।

लघुकथा

रिश्ता

अंजना वर्मा
लेखिका

विभा अपने दुख में डूबी बाहर बरामदे में बैठी हुई थी। हाल ही में उसके पति का निधन हो गया था। अभी तक वह अपने को सामान्य नहीं कर पाई थी कि किस तरह एकाकीपन से जूझते हुए जिंदगी जिये? वह चिंतामग्न बैठी हुई थी कि दिखाई पड़ा दो किन्नर अहाते के भीतर गेट खोलकर चले आ रहे हैं। ये दोनों वही थे जो पिछले साल उसकी पोती होने की खुशी में खूब नाचे थे। वह सोचने लगी कि ऐसे दुख-भरे दिनों में इन्हें किसने खबर दी कि उसके घर किसी बच्चे का जन्म हुआ है? या कोई खुशी हुई है? या ये खुद ही अंदाजा लगाकर चले आ रहे हैं कि कोई -न-कोई खुशी तो जरूर हुई होगी।

अब तक वे दोनों आकर उसके सामने खड़े थे। पर उनके चेहरे पर कोई चंचलता नहीं दिखाई दे रही थी। दोनों बोल भी नहीं रहे थे कुछ। उन्हें चुप देखकर विभा ने ही बात शुरू की। विभा ने बुझे स्वर में कहा, "किसी ने तुम्हें बताया नहीं कि ये नहीं रहे?"

उनमें से एक ने कहा, "हां दीदी, हमें मालूम हुआ। मोहल्ले के लोगों ने बताया।" फिर कुछ देर ठहर कर बोला, "दीदी, इसीलिए तो आए हैं। हमें सुनकर बहुत दुख हुआ कि क्या हो गया तुम्हारे साथ? तुमने तो किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा। फिर भगवान ने यह क्या किया? अपने को संभालो और क्या कहें हम?"

उनके सहानुभूतिपूर्ण वचन सुनकर भीतर से विभा द्रवित हो गई। इतना कहकर वे दोनों दो पल ठहरे। फिर उनके हाथ जुड़ गए, "अच्छा दीदी! नमस्ते।" वे वापस जाने के लिए मुड़े ही थे कि विभा ने उन्हें रोका, "रुको-रुको, ऐसे मत जाओ। तुम तो अपने रोजगार पर निकली हो। सुबह-सुबह खाली हाथ मत जाओ।"

विभा ने एक के हाथ में पांच सौ का नोट पकड़ा दिया और सोचने लगी कि क्या कोई उनकी संवेदनशीलता को समझ सकता है? जिसके यहां ये खुशी के मौके पर नाचने-गाने आए, उसी के यहां उसके गम में भी शरीक होने चले आए। समाज ने जिन्हें किसी रिश्ते योग्य नहीं समझ कर सदियों से बहिष्कृत कर रखा है, उन्होंने ही उसके साथ आज जो रिश्ता बना लिया उसे क्या नाम दे विभा?" और आज अपनी सहृयता का परिचय देकर वे उसकी नजर में सचमुच बहुत ऊपर प्रतिष्ठित हो गए थे-स्त्रीलिंग पुल्लिंग से भी ऊपर।

समीक्षा

रंग राधेश्याम

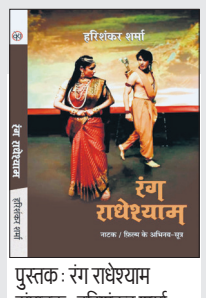

पुस्तक : रंग राधेश्याम
संपादक : हरिशंकर शर्मा
लेखक : पंडित राधेश्याम कथावाचक
प्रथम संस्करण : जून 2025
प्रकाशक : बेरा प्रकाशन मेन डिग्गी रोड, जयपुर
मूल्य 300
पृष्ठ संख्या 260
समीक्षक : रवि प्रकाश रामपुर

पंडित राधेश्याम कथावाचक के तीन अप्रकाशित नाटकों को हरिशंकर शर्मा ने रंग राधेश्याम शीर्षक से पुस्तक रूप में प्रकाशित कराया है। पुस्तक में विस्तार से तीनों नाटकों के संदर्भ और उपादेयता को रेखांकित किया गया है। धन्ना भगत एक धार्मिक रचना है। बत्तीस पृष्ठ का यह नाटक मंच पर खेले जाने के लिए सर्वथा उपयुक्त है। एक नाटक "आजादी" शीर्षक से है। इसमें काल्पनिक रूप से एक रियासत की परिकल्पना की गई है तथा उसमें आजादी लाने के लिए किए जाने वाले पुरुषार्थ को अभिव्यक्ति दी गई है। नाटक में रियासती सरकार की विलासिता और प्रजा पर किए जाने वाले जुल्म के खिलाफ आवाज उठाई गई है। उद्धार नाटक में तो कथावाचक जी ने कमाल ही कर दिया है। भारत विभाजन के बाद जो अत्याचार पाकिस्तान के भीतर भारत-भक्तों के साथ हुआ, उसका मार्मिक चित्र उद्धार नाटक में खींचा गया है। पुस्तक में नाटक के साथ-साथ फिल्म जगत में पंडित राधेश्याम कथावाचक के योगदान को भी रेखांकित किया गया है। पंडित राधेश्याम कथा वाचक की प्रसिद्धि का मुख्य आधार उनके द्वारा लिखित राधेश्याम रामायण है। लेकिन उन्होंने रंगमंच पर खेले जाने वाले नाटकों और उसके बाद फिल्मों के लिए काफी कुछ लिखा और कार्य किया। वह राष्ट्रीय विचारधारा के धनी थे। "रंग राधेश्याम" ने वास्तव में कथावाचक जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के अब तक अछूते रहे आयामों को प्रकाश में लाने का काम किया है।

पवित्र पाप

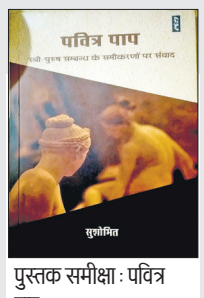

पुस्तक समीक्षा : पवित्र पाप
लेखक : सुशोभित
प्रकाशक : सेतु प्रकाशन
मूल्य : 180
पृष्ठ संख्या : 160
समीक्षक-दीपक कुमार खेड़ा

भारतीय समाज में स्त्री-पुरुष संबंधों को लेकर हमेशा चर्चा होती रही है। पुरुष मानसिकता में स्त्री को केवल भोग्या समझना और यौन संसर्ग तक सीमित रखना एक गहरी सामाजिक समस्या है। जब प्रेम और वासना का भेद मिट जाता है, तब स्त्री को मर्यादा की दीवारों में बांध दिया जाता है-और यह स्थिति सिर्फ संबंधों को ही नहीं, देश की सामाजिक और आर्थिक प्रगति को भी रोक देती है। 'पवित्र पाप' में लेखक सुशोभित ने इन्हीं ज्वलंत प्रश्नों को उठाया है। उन्होंने युवाओं के समूह में फैले असंयमित व्यवहार, स्त्री संसर्ग को 'जीत' समझने वाली सोच, और एक मर्दवादी समाज की संकीर्ण मानसिकता का गहन विश्लेषण किया है। यह पुस्तक बैठक में पढ़ी जा सकती है, लेकिन इसके विचारों की गहराई ज़िंदगी की दिशा बदलने की क्षमता रखती है। इसमें विवाह, प्रेम और यौन संबंधों को लेकर समाज में व्याप्त भ्रांतियों पर एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक यह संदेश देती है कि प्रेम सिर्फ शरीर से नहीं, मन से उपजता है-और एक बूंद सच्चे प्रेम की तृप्ति, यौन पिपासा से कहीं अधिक सशक्त हो सकती है।

व्यंग्य

साहित्य सेवा से सम्मान की मेवा तक

सूर्यदीप कुशवाहा
वाराणसी

वे बहुत बड़े साहित्य सेवक हैं। इसलिए उनकी साहित्यिक भूख भी बहुत बड़ी है। सम्मानों को लपकने की पैतराबाजी उन्होंने क्या खूब सीखी है? जिनको ललक होती है तो वे चालबाज़ी में पीएचडी करते हैं। वे भी कहीं सम्मान ढूढ़ने निकल पड़े हैं। अपने सपने में सम्मान की विजयमोहिनी सूरत देखकर और सीरत पर न चाहिए मान। वे सभी मंचों पर बैठने की जुगत भिड़ाते हैं और उनकी जुगाड़ का कोई भी तोड़ नहीं है। उनकी गोटी सेट है। वे देश ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यिक संस्थाओं के सम्मानों को भी झोली में भरते जा रहे हैं। वह अपनी लेखनी से ज्यादा अपनी जेब पर भरोसा करते हैं। जेब ढीली हो जाए पर सम्मान की भूख मिटनी चाहिए। पैसा हाथ का मैल है और सदा सम्मान खरीदते रहे तो शौहरत है। आभासी संसार से लेकर छोटे- छोटे आयोजनों में बंट रहे खैराती सम्मान पत्रों का ढेर लगाने में जो मजा है वह तुम क्या जानों सम्मानहीन बंदे। जब तुम्हारी रैक खाली, किस्मत की टूटी प्याली। सम्मानों के लिए वे अंगुलीमाल सा संकल्प लिए हैं। उनका लक्ष्य पर फोकस कम है लेकिन सम्मान पर टार्च जलाए बैठे हैं। साहित्यिक संस्थाएं अंग्रेजी घास सी रोज उग रहीं हैं। उसे चरने का साहस किसी में नहीं है। अपने पिछलग्गू को लिए बढ़ रही हैं।

साहित्य सेवा करने नहीं वे संस्था की उत्पत्ति मेवा के लिए किया है। साहित्य परिवर्तन के लिए उन्होंने थोड़े ही साहित्य में टांग अड़ाया है बल्कि, कल्कि अवतार की तरह ही सम्मानों का मान बढ़ाया। सूचना मिली है कि अभी-अभी वे ताजे वरिष्ठ घंटा सम्मान के लिए नामित हुए हैं। उनके जेब की कद को देखते हुए एक और फलाने संस्था द्वारा मानक उपाधि दिए जाने की घोषणा जोर-शोर से किया है। उनके अब बहुत से शागिर्द हैं उनको भी सम्मान चाहिए। सम्मान की लालच में ही शागिर्द बने हैं। संस्था सारा इंतजाम सहयोग से करता है। साहित्य जगत में सहयोगी का सम्मान न रहने पर भी सम्मानित करती है। जिससे उनको साहित्यिक बिरादरी में सम्मान देने का सर्टिफाइड लाइसेंस मिल जाता है।

आपको वरिष्ठ सम्मान चाहिए या गरिष्ठ सम्मान सब मिलता है। क्या खरीदोगे? यह सम्मान कबीर और परसाई से ऊपर का व्यंग्यकार बना सकते हैं। वे सम्मानित होते ही खबरों में धकाधक छपते हैं और खबरों में पढ़कर कुछ बिन पानी छटपटाते हैं। वे संस्थाओं का आभार ऐसे जताते हैं जैसे किडनी दान कर दी हो। सम्मानों की वैरायटी लजीज व्यजनों जितनी है। जितना चाहो उतना स्वाद चखों। फिर सोशल मीडिया में फेको और कमाल देखो। आभासी दुनिया में होती जय-जयकार और कोई नहीं करेगा कभी सम्मानित का प्रतिकार। अब अगले सम्मान के फेर में फेरे लगा रहे हैं। भला बिना योग्यता के भी सम्मान मिलता है। इन सम्मानों का मेवा साहित्य सेवा थोड़े ही है। वे सम्मानित होने को लालायित रहते हैं। पता है वे अंतर्राष्ट्रीय समाज सेवा के लिए गवर्नर भी नियुक्त कर दिए जाते हैं।

बाकायदा इसका लेटर एलियन लोक से जारी हो जाता है... लेकिन दुर्भाग्य उनको कोई नहीं जानता। किसी सामान्य ज्ञान में नाम नहीं उड़ता लेकिन आभासी दुनिया में खुद ढ़ीढोरा खूब पीटता। जिस किसी को साहित्यिक संस्थाओं से कोई सम्मान नहीं मिला है, ऐसे कुंवारे किस्मत के मारे जल्द संपर्क कर अपनी पहचान को आयाम दें। बहुत ही भव्य सम्मान समारोह आयोजित कर उनको सम्मानित करने की योजना का खाका खींचा जा चुका हैं। बस योग्यता अपना सहयोग देकर कीमती श्रीफल सम्मान झटके। आप बस लिखते हों। क्या लिखते हो? उससे संस्था का लेनादेना थोड़े ही है। जो लोग परामर्श चाहते हैं कृपया व्हाट्सप्प संपर्क सूत्र पर मैसेज डाल कर सम्मान का मेवा कमाएं। सम्मान की गंगा में विशेष स्नान पर्वो पर पुण्य की डुबकी लगाएं और एक नया सम्मान पाएं।

सम्मान के वशीभूत हैं क्योंकि वे समकालीन साहित्य के विकास की धुरी हैं। शीघ्र ही चक्कर पूरी होने पर शानदार जश्न का दीदार होगा। साहित्य का उन्नयनकाल को वे त्रिकालदर्शी बनकर देख लिए हैं। उनको देखकर भी कोई कैसे अनदेखा कर सकता है। सुपर डुपर और बुकर सम्मान को पाना भले संभव न हो। किंतु वे झाड़ी-झंखाड़ सम्मानों को पाकर ही शोर बुकर प्राइज़ जैसा ही करते हैं। सच में साहित्य सेवा से सम्मान का मेवा तक पहुंचकर किसे नहीं खाना पसंद होगा?

आयुर्वेद में उपवास की महत्ता
श्रद्धा से विज्ञान तक का पुल

डॉ राम बाबू प्रजापति
पंचकर्म विभाग, रोहिलखंड आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एवं चिकित्सालय बरेली

आयुर्वेद भारत की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति है, जिसका इतिहास हजारों वर्षों पुराना है। यह केवल रोगों के उपचार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की एक संपूर्ण जीवनशैली है। आज आधुनिक जीवनशैली की तेज़ गति, असंयमित दिनचर्या, अहितकर आहार, तनाव और प्रदूषण ने मानव को रोगों के जाल में जकड़ लिया है। ऐसे समय में आयुर्वेद हमें एक शुद्ध, संतुलित और प्राकृतिक जीवन जीने की दिशा में मार्गदर्शन करता है। इसी जीवनशैली में एक महत्वपूर्ण स्थान 'उपवास' को भी प्राप्त है। उपवास न केवल एक धार्मिक अनुष्ठान है, बल्कि यह शरीर, मन और आत्मा को शुद्ध करने की आयुर्वेदिक औषधीय पद्धति भी है। उपवास का तात्पर्य केवल निराहार रहना भी बल्कि शरीर-मानस पापों एवं असम्यक आहार को त्यागकर सम्यक आहार लेने से है ।

आयुर्वेद की दृष्टि में उपवास का तात्पर्य है—शरीर को विषरहित करना, पाचन अग्नि को प्रज्ज्वलित करना, दोषों को संतुलित करना तथा मानसिक और आत्मिक संतुलन की प्राप्ति। चरक संहिता में उल्लेख है- "लंघनं परमौषधम", अर्थात उपवास सर्वोत्तम औषधि है। जब शरीर को आहार से कुछ समय के लिए विराम दिया जाता है, तो पाचन तंत्र को विश्राम मिलता है और वह स्वाभाविक रूप से स्वयं की मरम्मत करता है। शरीर में जमे हुए 'आम' (अपचित भोजन या विष) का निष्कासन होता है, जिससे अनेक रोगों से मुक्ति मिलती है।

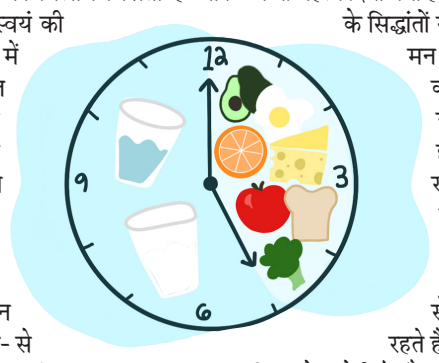

आयुर्वेद के अनुसार शरीर की क्रियाओं का नियमन करने वाले तीन दोषों-वात, पित्त और कफ- से बना होता है। इन दोषों का असंतुलन ही रोगों का मूल कारण है। उपवास इन दोषों को संतुलित करने में सहायक होता है। उपवास से जठराग्नि (पाचन अग्नि) तीव्र होती है, जिससे अपच, गैस, अम्लपित्त आदि समस्याओं से राहत मिलती है। उपवास के माध्यम से शरीर के भीतर संचित विषैले तत्व बाहर निकलते हैं और कोशिकाएं पुनर्जीवित होती हैं। इसके साथ ही उपवास मानसिक शांति भी प्रदान करता है। जब शरीर भोजन से मुक्त होता है, तब मन प्रार्थना, ध्यान और आत्मनिरीक्षण की ओर प्रवृत्त होता है। यह स्थिति आत्मिक उन्नति की ओर ले जाती है।

भारतीय परंपरा में उपवास को धार्मिक साधना के रूप में भी महत्व दिया गया है। किंतु जब इन व्रतों को आयुर्वेद के सिद्धांतों से जोड़ा जाए, तो वे शरीर और मन की गहन चिकित्सा का कार्य करते हैं। जैसे-एकादशी व्रत, जो पखवाड़े में एक बार आता है, चंद्रमा के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए रखा जाता है। चंद्रमा का प्रभाव शरीर के जल तत्व और मानसिक स्थिति पर होता है। एकादशी को उपवास रखने से शरीर के जल तत्व संतुलित रहते हैं और मन शांत होता है। पाचन क्रिया तेज़ होती है और चंद्र प्रभाव से मानसिक एकाग्रता भी बढ़ती है।

इसी प्रकार प्रदोष व्रत (त्रयोदशी), सोमवार व्रत, शनिवार उपवास, नवरात्रि उपवास और कार्तिक मास व्रत भी आयुर्वेदिक दृष्टि से उपयोगी हैं। यह व्रत न केवल आत्मिक साधना का माध्यम हैं, बल्कि यह शरीर को ऋतुओं के परिवर्तन के अनुकूल ढालने का अवसर भी देते हैं। विशेषकर नवरात्रि, जो साल में दो बार आती है, उस समय शरीर को 'डिटॉक्स' करने, पाचन अग्नि को संतुलित करने और नए आहार चक्र की तैयारी करने का उत्तम समय होता है। इन नौ दिनों में फलाहार, सादा भोजन, मौन और ध्यान का संयोजन यदि किया जाए, तो यह संपूर्ण पंचकोशीय (शरीर, प्राण, मन, बुद्धि, आत्मा) स्वास्थ्य को पोषित करता है।

इन्हीं उपवासों में एक विशेष और बहुत लोकप्रिय उपवास है-सावन के 40 दिन का व्रत, जिसे श्रद्धा, संयम और भक्ति के साथ किया जाता है। यह व्रत विशेषकर भगवान शिव की आराधना के लिए किया जाता है, लेकिन आयुर्वेदीय दृष्टि से देखा जाए तो यह व्रत वर्षा ऋतु में शरीर को हल्का और रोगमुक्त रखने का एक उत्कृष्ट माध्यम है। वर्षा ऋतु में वात दोष अत्यधिक बढ़ जाता है, जिससे जोड़ों का दर्द, अपच, सर्दी, त्वचा विकार, और आलस्य जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। इस ऋतु में पाचन अग्नि भी मंद रहती है, इसलिए भारी भोजन या अधिक मात्रा में तले एवं गरिष्ठ आहार से अनेक रोग पनपते हैं। ऐसे समय में जब व्यक्ति सावन में 40 दिन तक उपवास करता है-विशेष रूप से फलाहार, दूध, गिलोय, तुलसी जल, लघु भोजन आदि का सेवन करते हुए-तो यह शरीर में संचित आम और दोषों का नाश करता है।

सावन व्रत के लाभ

सावन व्रत का एक और लाभ यह है कि यह मानसिक और आत्मिक स्थिरता प्रदान करता है। नित्य भगवान शिव का स्मरण, ध्यान, मंत्र जाप और संयमित जीवन शैली— इन सबका सकारात्मक प्रभाव नाड़ी तंत्र पर पड़ता है। व्यक्ति न केवल रोगों से बचता है, बल्कि वह भीतर से शांत, एकाग्र और ऊर्जावान अनुभव करता है। इस 40 दिवसीय उपवास को यदि आयुर्वेदीय दृष्टिकोण से संचालित किया जाए-यथा नियमपूर्वक स्नान, प्राणायाम, त्रिफला जल सेवन, पंचगव्य सेवन, या गिलोय रस- तो यह व्रत केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि शरीर-मन-आत्मा के संपूर्ण शुद्धिकरण का माध्यम बन जाता है।

वर्तमान युग में जब विज्ञान और चिकित्सा पद्धति में नए प्रयोग हो रहे हैं, उपवास ने एक नया रूप लिया है-जिसे इंटरमिटेंट फास्टिंग (आंतराल उपवास) कहा जाता है। यह एक आधुनिक उपवास पद्धति है, जिसमें व्यक्ति 16 घंटे भोजन से विराम रखता है और 8 घंटे के भीतर भोजन करता है (16:8 नियम)। अन्य लोकप्रिय प्रारूपों में 5:2 उपवास (सप्ताह में दो दिन बहुत कम कैलोरी वाला भोजन) भी है। यह विधि मूलत: आयुर्वेदिक "लंघन" पद्धति के ही समान है, जिसमें शरीर को नियमित अंतराल पर विश्राम देकर पाचन अग्नि को सशक्त किया जाता है। इंटरमिटेंट फास्टिंग से मोटापा कम होता है, मधुमेह नियंत्रण में रहता है, कोशिका पुनर्जीवित होती है और शरीर में सूजन कम होती है। इसका प्रभाव आयुर्वेद के 'दोष शमन' सिद्धांत से मेल खाता है।

पंचकर्म, जो आयुर्वेद की विशिष्ट और गहन शुद्धि प्रणाली है, उसमें भी उपवास का विशेष स्थान है। पंचकर्म की पांच प्रक्रियाओं-वमन, विरेचन, बस्ति नस्य और रक्तमोक्षण- से पूर्व रोगी को उपवास, स्नेहन और स्वेदन की प्रक्रिया से गुजरना होता है। यह शरीर को शुद्ध करने का प्रारंभिक और अत्यंत आवश्यक चरण है। उपवास के माध्यम से शरीर को पंचकर्म के लिए तैयार किया जाता है ताकि उपचार अधिक प्रभावशाली हो।

हालांकि उपवास करते समय कुछ सावधानियां भी आवश्यक हैं। उपवास हमेशा व्यक्ति की प्रकृति, उम्र, ऋतु, और शारीरिक क्षमता को ध्यान में रखकर ही करना चाहिए। गर्भवती महिलाएं, स्तनपान कराने वाली महिलाएं, वृद्ध, बच्चे या गंभीर रोग से पीड़ित व्यक्ति को उपवास चिकित्सकीय सलाह के बिना नहीं करना चाहिए। उपवास के बाद आहार की शुरुआत हल्के और सुपाच्य भोजन से करनी चाहिए, अन्यथा पाचन अग्नि को हानि हो सकती है। जल का सेवन उपवास के प्रकार के अनुसार करना चाहिए और उपवास के दौरान मानसिक स्थिति को स्थिर बनाए रखने के लिए मौन, प्रार्थना, ध्यान या मंत्रजप जैसे अभ्यास किए जाने चाहिएं।

आयुर्वेद और उपवास एक-दूसरे के पूरक हैं। यह केवल एक चिकित्सा नहीं, बल्कि जीवन जीने की शैली है। धार्मिक व्रतों जैसे एकादशी, प्रदोष, सावन व्रत, नवरात्रि उपवास, और आधुनिक इंटरमिटेंट फास्टिंग- सभी यदि आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से समझे और अपनाए जाएं, तो यह व्यक्ति को केवल रोगमुक्त ही नहीं, बल्कि आत्मा से जागरूक, मन से शांत और शरीर से स्वस्थ बना सकते हैं। जब हम आयुर्वेद की दिनचर्या, ऋतुचर्या, उचित आहार-विहार और उपवास जैसी विधियों को अपनाते हैं, तो हम रोगों से मुक्त रहते हुए एक संतुलित, शांत और दीर्घायु जीवन जी सकते हैं।

रुद्राक्ष-एलियोकार्पस गनीट्रस

सुंदर श्वेताभ पुष्प और नीलवर्णी फल अद्भुत पेड़ हैं जिसे रुद्राक्ष कहते हैं जिसके बीजों को, साधु-संत, योगी-महात्मा, संन्यासी आदि जिसकी माला आभूषण के रूप में धारण करते हैं। कई बार बच्चों को भी काले धागे में पिरो कर पहनाया जाता है जो। वही रुद्राक्ष। यह रुद्राक्ष जिसका वैज्ञानिक नाम एलियोकार्पस गनीट्रस है, एलेओकार्पेसी परिवार का एक महत्वपूर्ण सदस्य है। यह मध्यम आकार के वृक्षों और झाड़ियों का समूह है जो विशेष रूप से ऊष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से उगते हैं। हमारे शास्त्रों में इस रुद्राक्ष को धार्मिक, आध्यात्मिक और औषधीय दृष्टि से उच्च स्थान प्राप्त है। इसके घने पेड़ मुख्य रूप से भारतीय उपमहाद्वीप, नेपाल, थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया और मलेशिया में पाए जाते हैं।

नीलम सौरभ
रायपुर

रुद्राक्ष का पेड़ और आकार

रुद्राक्ष का पेड़ 15-30 मीटर तक ऊंचा होता है। इसके पत्ते लंबे, हरे और चमकदार होते हैं। इसमें छोटे-छोटे बेर के आकार के नीले रंग के फल लगते हैं, जिनके भीतर एक-एक बीज होता है, वही रुद्राक्ष कहलाता है। इन बीजों की सतह पर विशेष प्रकार की खांचेदार धारियां होती हैं, जिन्हें 'मुख' कहा जाता है। सुना होगा न आपने भी कि 'एकमुखी रुद्राक्ष' दुर्लभ होता है, सौभाग्य से ही मिलता है। रुद्राक्ष वास्तव में एकमुखी से लेकर 21 मुखी तक पाए जाते हैं, जिनमें 'पंचमुखी' यानी पांच धारियों वाला सबसे अधिक प्रचलित है, आमतौर पर यही मिलता है।

ठण्डे क्षेत्रों में पाया जाता

रुद्राक्ष की उत्पत्ति मुख्य रूप से ठण्डे हिमालयी क्षेत्र और दक्षिण-पूर्व एशिया के शीतोष्ण और आर्द्र वातावरण में होती है। नेपाल, भारत के उत्तराखण्ड और हिमाचल प्रदेश में इसके वृक्षों की प्राकृतिक उपस्थिति देखी जाती है साथ ही इण्डोनेशिया और थाईलैण्ड में भी बहुतायत में पाये जाते हैं।

क्या है पुरातन मान्यता

हिन्दू धर्म में रुद्राक्ष को भगवान शिव का आशीर्वाद माना गया है। पुरातन मान्यता है कि यह उनके अश्रुओं से उत्पन्न हुआ था। योगी, संत और साधु इसे इसलिए धारण करते हैं, क्योंकि यह मानसिक शान्ति, निर्विघ्न ध्यान और आध्यात्मिक उन्नति में सहायक होता है। रुद्राक्ष की माला पहनने से मस्तिष्क में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ता है जिससे मानसिक तनाव स्वत: कम हो जाता है ऐसा माना जाता है।

आयुर्वेद में रुद्राक्ष

आयुर्वेद में भी रुद्राक्ष को रक्तचाप नियंत्रण और हृदय रोगों में लाभकारी तथा मानसिक शान्ति प्रदान करने वाला माना गया है। इसके बीजों में विद्युत चुम्बकीय गुण होते हैं, जो शरीर की ऊर्जा सन्तुलित करते हैं जिससे थकान कम होती है, स्फूर्ति आती है और मन प्रसन्न रहता है। इन बातों का अर्थ है कि जो भी रुद्राक्ष की माला धारण करता है, उसे यह सब लाभ अनायास ही प्राप्त हो जाते हैं।

खाना खजाना

क्रिस्पी मैगी भेल

सामग्री

- मैगी- दो पैकेट
- प्याज कटा- 1
- टमाटर- 1
- हरी मिर्च- 2-4
- मूंगफली (भुनी हुई)- 4 चम्मच
- नीबू का रस- 2 चम्मच
- चाट मसाला- 1 चम्मच
- सेव- 4 चम्मच
- धनिया पत्ती- गार्निश के लिए
- नमक - स्वादानुसार

दिन का वक्त हो या शाम का जब भी हल्की भूख लगती है तो हम हैवी खाने के बजाय कुछ फटाफट तैयार होने वाला फूड तलाशते हैं। ऐसे वक्त के लिए मैगी परफेक्ट होती है। अगर आप पारंपरिक मैगी नहीं खाना चाहते हैं तो कोई बात नहीं आज हम आपको मैगी भेल बनाने का तरीका बताएंगे जो स्नैक्स के तौर पर आपको काफी पसंद आएगी।

बनाने की विधि

इसे बनाने के लिए आपको सबसे पहले दो पैकेट मैगी को मिक्सी में दरदरा पीस लें। अब एक कढ़ाई में तेल डालकर गर्म कर लें। इसके बाद इसमें मैगी डालें और क्रिस्पी होने तक रोस्ट कर लें। अब एक बाउल में बारीक कटा प्याज, टमाटर, हरी मिर्च और धनिया डालें। इसके साथ ही इसमें भुनी हुई मूंगफली, नीबू का रस, चाट मसाला और मैगी डालिए। अब इसमें थोड़ा सा सेव डालें और अच्छी तरह मिला लें। इसके बाद इसमें स्वादानुसार नमक डालकर मिला लें। बस तैयार है आपकी चटपटी और क्रिस्पी मैगी भेल। इसे धनिया पत्ती से गार्निश करके सर्व करें।

अंकिता जोशी
फूड ब्लॉगर

फिल्म जगत

बड़े पर्दे पर दिखेगा रोमांस, एक्शन और कॉमेडी का धमाल

आने वाला एक महीना बड़े पर्दे पर जबरदस्त रोमांस, एक्शन और कॉमेडी का धमाल मचाने आ रहा है। एक से बढ़कर एक फिल्में रिलीज होने के लिए तैयार हैं। राजकुमार राव की फिल्म 'मालिक' की टक्कर बॉक्स आफिस पर आंखों की गुस्ताखियां से होगी। दोनों फिल्में 11 जुलाई को रिलीज होंगी।

'आंखों की गुस्ताखियां' से शनाया 'सैयारा' में आहान पांडे करेंगे डेब्यू

11 जुलाई को ही रिलीज होने वाली फिल्म 'आंखों की गुस्ताखियां' से बॉलीवुड में एक और नया स्टारकिड कदम रखेगा। संजय कपूर की बेटी शनाया कपूर इस फिल्म से डेब्यू कर रही है। इस रोमांटिक ड्रामा फिल्म में उनके अपोजिट विक्रांत मैसी और जैन खान दुर्रानी मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। फिल्म का निर्देशन संतोष सिंह ने किया है। इसी तरह सैयारा फिल्म का भी फैंस बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। लोगों को उम्मीद है कि ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर दमदार कमाई करेगी। इस फिल्म से अनन्या पांडे के भाई आहान पांडे डेब्यू करेंगे। यह फिल्म 18 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

एक्शन-थ्रिलर 'मालिक' में गैंगस्टर बने हैं राजकुमार

11 जुलाई को प्रदर्शित होने वाली राजकुमार राव की फिल्म 'मालिक' एक एक्शन ड्रामा फिल्म है, जिसका निर्देशन पुलकित ने किया है, जो अपनी अनूठी कहानी कहने की शैली के लिए जाने जाते हैं। फिल्म का शूटिंग पिछले माह ही पूरी हुई है। इस मालिक का निर्माण टिप्स फिल्म्स और नॉर्दर्न लाइट्स फिल्म्स ने किया है। निर्माता कुमार तौरानी और जय शेवाक्रमानी हैं। राजकुमार राव इस फिल्म में एक नए अवतार में नजर आएंगे। वह इस एक्शन-थ्रिलर में गैंगस्टर की भूमिका निभाएंगे, जो उनकी पिछली भूमिकाओं से काफी अलग रोल है। प्रशंसक उनका नया अंदाज देखने के लिए बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। मालिक का फर्स्ट लुक पहले ही सोशल मीडिया पर धूम मचा चुका है। पोस्टर में राजकुमार राव का तीव्र और क्रूर रूप फैंस को कहानी और उनके किरदार के बारे में उत्सुक बना रहा है।

13 साल बाद जस्सी बनकर सन ऑफ सरदार-2' से वापसी करेंगे अजय देवगन

तुषार जलोटा के निर्देशन में बनी सिद्धार्थ मल्होत्रा और जाह्नवी कपूर की फिल्म 'परम सुंदरी' एक खूबसूरत लव स्टोरी और कॉमेडी है। ये फिल्म सिनेमाघरों में 25 जुलाई को रिलीज होगी। इसमें उत्तर भारत के लड़के की दक्षिण की लड़की से प्रेम दिखाया गया है। 25 जुलाई को ही रिलीज होने जा रही फिल्म 'सन ऑफ सरदार-2' इस लव स्टोरी को कड़ी चुनौती देगी। 'सन ऑफ सरदार-2' में 13 साल बाद फिर से अजय देवगन जस्सी रंधावा बनकर लौट रहे हैं। इस फिल्म में एक बार फिर से वह दिखाई इस बार जगह है। संजय दत्त से भिड़ते हुए देंगे। लेकिन फिल्म में सोनाक्षी सिन्हा की मृणाल ठाकुर ने ली विजय कुमार अरोड़ा निर्देशित यह फिल्म लोगों को जमकर हंसाएगी।

सनी देओल, संजय दत्त, मिथुन व जैकी श्राफ एक साथ 'बाप' में

31 जुलाई को फिल्म 'बाप' रिलीज करने की तैयारी है। इसमें संजय दत्त और सनी देओल मुख्य भूमिका में हैं। यह एक एक्शन फिल्म है, जिसमें 80 और 90 दशक के चार एक्शन सुपरस्टार्स सनी देओल, संजय दत्त, मिथुन चक्रवर्ती और जैकी श्राफ एक साथ दिखाई देंगे। नवंबर 2022 में फिल्म का फर्स्ट लुक सामने आया था, तब कहा गया था कि साल 2023 में फिल्म रिलीज होगी, लेकिन तब नहीं हुई। पिल्म रुकी रही। इस फिल्म में सनी देओल एकदम गैंगस्टर वाले अवतार में दिखाई देंगे।

वॉर 2 और द दिल्ली फाइल्स में होगी बॉक्स आफिस पर टक्कर

वॉर 2 एक आगामी बॉलीवुड एक्शन ड्रामा फिल्म है, जिसका निर्देशन अयान मुखर्जी द्वारा किया जा रहा है। इस फिल्म के निर्माता आदित्य चोपड़ा हैं। यह फिल्म यश राज स्पाई यूनिवर्स की सातवीं फिल्म होगी। इस फिल्म में एक्टर ऋतिक रोशन और जूनियर एनटीआर लीड रोल में हैं। यह फिल्म 14 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के मौके पर रिलीज होगी। वॉर 2 की टक्कर 15 अगस्त को रिलीज होने वाली 'द दिल्ली फाइल्स' से होगी, जिसमें मिथुन चक्रवर्ती मुख्य भूमिका में हैं।

समीक्षा

शैतान यूनिवर्स फिल्म मां

हिंदी सिनेमा लंबे समय से भेड़चाल का शिकार रहा है। मां फिल्म भी इसी भेड़चाल के चलते बनाई गई है। स्त्री 2 की सफलता ने हॉरर कॉमेडी जॉनर में और फिल्में बनानें को प्रेरित किया और लोग गए एक ही जैसी तमाम फिल्में बनाने में। काजोल, रोनित रॉय, इंद्रनील गुप्ता की यह फिल्म शैतान यूनिवर्स की फिल्म कही जा रही है। जबकि अंत में क्रेडिट्स के समय आर माधवन के पर्दे पर दिखने के अतिरिक्त कोई साम्यता नहीं दिखती है शैतान फिल्म से।

जहां शैतान में आर माधवन ने विलेन की भूमिका में जान डाल दी थी वहीं इस फिल्म में रोनित रॉय ऐसा कर पाने में फेल होते नजर आते हैं।

काजोल भी कई जगहों पर थकी-थकी नजर आती हैं। अंत के कुछेक दृश्यों को छोड़ दें तो काजोल का अभिनय भी साधारण ही रहा है। अगर कहानी की बात करें तो यह रक्तबीज के आख्यान से प्रेरित है। रक्तबीज वर्तमान समय में अपना वंश बढ़ाना चाहता है ताकि वह संपूर्ण मानवता को समाप्त कर सके। फिल्म बनाते समय शायद अच्छे से शोध नहीं किया गया है। फिल्म की शुरुआत में ही काजोल जब बच्चों को देवी के सभी स्वरूपों की कहानी सुना रही होती हैं तो वह रक्तबीज की ऐसी कहानी सुनाती हैं जिसका मार्कण्डेय पुराण के दुर्गा सप्तशती से कोई लेना-देना ही नहीं है। शायद रक्तबीज के आख्यान का आधार ग्रंथ भी अजय देवगन की टीम से नहीं पढ़ा गया और वे वॉर्ट्सएप वाली कहानी सुनाने लगे।

स्पेशल इफेक्ट्स भी ऐसे नहीं हैं जिनकी तारीफ की जा सके। हॉरर फिल्म में हॉरर नहीं है। सस्पेंस क्रिएट करने की असफल कोशिश भी इस फिल्म में हुई है। समग्रता में देखें तो यह एक औसत फिल्म है। कभी समय मिलने पर सब्जी बनाते या खाना खाते हुए एकबार घर पर देखी जा सकती है।

समीक्षक -बीपिन पांडेय

साप्ताहिक राशिफल

-पं.मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

मेष

इस सप्ताह करियर अथवा कारोबार में आपकी थोड़ी-सी भी लापरवाही भविष्य में बड़ी दिक्कत का कारण बन सकती है। यदि आप नौकरीपेशा व्यक्ति हैं, तो आपको अपने सीनियर और जूनियर दोनों से तालमेल बिठाकर चलना चाहिए तथा किसी भी काम को कल पर टालने से बचना चाहिए।

वृष

इस सप्ताह अपने करियर और कारोबार की प्रगति को लेकर अधिक सतर्क रहेंगे। लंबी अथवा छोटी दूरी की यात्रा के योग बनेंगे। यह यात्रा सुखद एवं नए संपर्कों को बढ़ाने वाली सिद्ध होगी। अविवाहित लोगों की लाइफ में मनचाहे व्यक्ति का आगमन हो सकता है।

मिथुन

इस सप्ताह जीवन में जिन अवसरों को पाने के लिए लंबे समय से प्रयासरत हैं, उन्हें उनकी प्राप्ति हो सकती है। घर और बाहर दोनों ही जगह आपके कामकाज और निर्णयों की सराहना होगी। आप अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त करते हुए उच्च पद एवं मान-सम्मान अर्जित करेंगे।

कर्क

यह सप्ताह खर्चीला रहने वाला है। आप अपनी सुख-सुविधाओं पर आवश्यकता से अधिक खर्च कर सकते हैं। करियर और कारोबार की दृष्टि से यह सप्ताह अनुकूल रहेगा, फिर भी किसी भी बड़े निर्णय को जल्दबाज़ी में लेने से बचना चाहिए।

सिंह

यह सप्ताह भाग्यशाली रहेगा। आपके सोचे हुए कार्य समय पर और मनचाहे तरीके से पूरे होंगे। सप्ताह की शुरुआत किसी बहुप्रतीक्षित शुभ समाचार से हो सकती है, जिससे घर-परिवार में खुशियों का माहौल रहेगा। यदि कोई मामला कोर्ट-कचहरी में लंबित है, तो उसमें राहत मिल सकती है। सरकारी या प्रशासनिक मामलों में भी सफलता के संकेत हैं।

कन्या

इस सप्ताह किसी भी कार्य में लापरवाही करने से बचना होगा, अन्यथा कार्य विशेष में सफलता की बजाय असफलता और फायदे की जगह बड़ा नुकसान झेलना पड़ सकता है। इस सप्ताह किसी भी काम में नियमों का उल्लंघन करने से बचें। यदि आप पार्टनरशिप में कोई कार्य करते हैं तो आंख मूंदकर दूसरों पर विश्वास न करें तथा कागजी काम समय पर निबटाएं।

तुला

इस सप्ताह आपको कभी घी घना तो कभी सूखा चना जैसी परिस्थितियों से गुजरना पड़ सकता है। ऐसे में आपको सप्ताह की शुरुआत से ही अपने समय, ऊर्जा और धन आदि का प्रबंधन करके चलना उचित रहेगा। आपको पूर्व में किए गए प्रयासों और मेहनत का आंशिक फल प्राप्त हो सकता है।

वृश्चिक

इस सप्ताह आपको दूसरों की बजाय अपनी शक्ति और सामर्थ्य पर भरोसा करके चलना उचित रहेगा। सप्ताह की शुरुआत में कुछ बड़े खर्च आने के कारण आपका बना-बनाया बजट गड़बड़ा सकता है। इस दौरान सौभाग्य का अपेक्षित साथ न मिलने के कारण चीजें कभी बनती तो कभी अटकती नजर आएंगी।

धनु

इस सप्ताह आप अपने करियर और कारोबार में आ रही अड़चनों तथा घर-परिवार के किसी सदस्य विशेष को लेकर चिंतित रह सकते हैं। इस सप्ताह चिंता छोड़ चिंतन करने की आवश्यकता रहेगी। सप्ताह के पूर्वार्ध का समय काफी आपाधापी भरा रह सकता है। इस दौरान आपको छोटे-छोटे कार्यों को पूरा करने के लिए अधिक परिश्रम और प्रयास करने पड़ सकते हैं।

मकर

यह सप्ताह मिश्रित फलदायी रहने वाला है। सप्ताह की शुरुआत में व्यर्थ के कार्यों में ऊर्जा, समय और धन की खपत होने के कारण आपका मन खिन्न रहेगा। घरेलू समस्याओं का असर आपके करियर और कारोबार पर देखने को मिल सकता है। इस सप्ताह नौकरीपेशा लोगों को कोई भी कदम बहुत सोच-समझकर उठाने की आवश्यकता रहेगी।

कुंभ

यह सप्ताह शुभता और सौभाग्य लिए हुए है। यदि आप कई दिनों से किसी शुभ सूचना की प्राप्ति के लिए इंतजार कर रहे थे तो आपका यह इंतजार इस सप्ताह समाप्त हो सकता है। करियर और कारोबार से जुड़े अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। सप्ताह की शुरुआत में किसी प्रिय व्यक्ति के घर आगमन से खुशियों का माहौल बना रहेगा।

मीन

इस सप्ताह अपने करियर-कारोबार में आंशिक सुधार देखने को मिल सकता है। इस सप्ताह आप पहले की अपेक्षा अधिक जोश के साथ चीजों को योजनाबद्ध तरीके से समय पर पूरा करते हुए नजर आएंगे। सप्ताह के मध्य का समय नौकरीपेशा जातकों के लिए शुभ कहा जाएगा।

वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

काकुरो 16

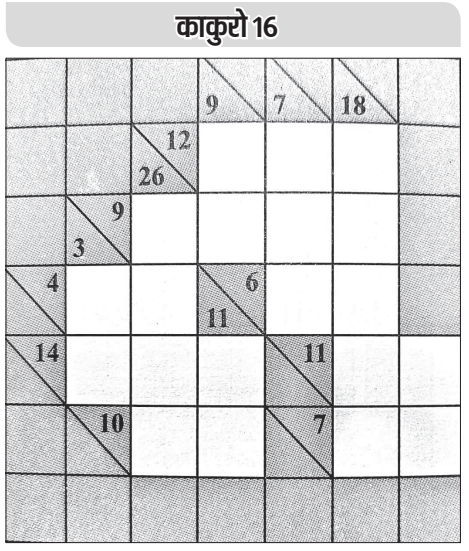

काकुरो 15 का हल

			19	6	
	20	3 6	2	1	
14	3	1	8	2	
22	8	2	9	3	
12	9	3			

जोक्स ऑफ द डे

बॉयफ्रेंड- यार तुम इतनी टेंशन में क्यों लग रही हो?
गर्लफ्रेंड- यार मैंने न कल 50 का सिक्का निगल लिया था
बॉयफ्रेंड- इसमे टेंशन की क्या बात है
आजकल 50 का सिक्का तो चलता ही नहीं है
गर्लफ्रेंड बेहोश....

संता की शादी एक नर्स से हो गई
बंता ने पूछा- और यार संता कैसी कट रही है?
संता- पूछ मत यार जब तक सिस्टर न बोलो तो बोलती ही नहीं है।

नाना साहब ने बिठूर में ग्रहण की थी पेशवाई

कानपुर में 5 जून 1857 को जो क्रांति का शंखनाद हुआ वह 25 जून को व्हीलर की किलेबंदी से श्वेत ध्वज फहरा आत्मसमर्पण के साथ समापन हुआ। 26 जून को हुए शांति समझौता मे अंग्रेजों ने इलाहाबाद भेजने की मांग की, 27 जून को सत्तीचौरा घाट से अंग्रेज रवाना हो रहे थे कि बिगुल बज गया और नाविक गंगा मे कूंद गए। इसके बाद हुए नरसंहार में सभी अंग्रेज पुरुषों का कत्ल कर दिया गया और बचे महिलाएं व बच्चे सवादा कोठी मे भेज दिए गए। इसमें दो नावें बच निकली थी।

इसके साथ ही अब पूर्णरूपेण कानपुर की कमान नाना साहब के हाथों में थी। 27 जून को सायंकाल सवादा मैदान में सैन्य परेड हुई और परेड की सलामी नाना साहब पेशवा ने ली। शेपहर्ड के मुताबिक सैन्य परेड में सैन्य टुकड़ियां शामिल हुईं।

द्वितीया लाइट इन्फैंट्री, कानपुर की नेटिव इन्फैंट्री की पहली, 53वीं और 56वीं रेजिमेंट।, 1 और 2 अवध अनियमित कैवलरी।, लखनऊ से अवध नेटिव इन्फैंट्री की दो रेजिमेंट, आजमगढ़ से नेटिव इन्फैंट्री की 17वीं रेजिमेंट और 13वीं अनियमित कैवलरी, नेटिव इन्फैंट्री की 12वीं रेजिमेंट, 14वीं अनियमित कैवलरी, नौगांव से 18वीं फील्ड बैटरी, इलाहाबाद से 10वीं नेटिव इन्फैंट्री की टुकड़ी और कानपुर में न्यूली इन्फैंट्री की हाफ रेजिमेंट।

अनूप कुमार शुक्ल
महासचिव इतिहास समिति, कानपुर

इस सैन्य परेड में कानपुर में भर्ती सेना व जमींदारों के दल भी शामिल हुए थे। परेड में नाना साहब के सम्मान में 21 तोपों, बाबा साहब व राव साहब के सम्मान में 17-17 और ब्रिगेडियर ज्वालाप्रसाद व तात्या टोपे के सम्मान में 11-11 तोपों की सलामी दी गईं। संक्षिप्त संबोधन के साथ सैनिकों को एक लाख रुपया ईनाम बांटे जाने की घोषणा की गई।

28 जून 1857 को दोपहर में नहर के पास मैदान में विशाल दरबार लगा। नाना साहब पेशवा को उच्च स्थान पर बैठाया गया। घेरे पर आक्रमण करने वाले तोपखाने के सैनिकों का विशेष सम्मान किया गया। दरबार शुरू होने पर मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर के सम्मान में 101 तोपों की सलामी दी गई। बाला साहब व रावसाहब को 17-17, तात्या टोपे व टीका सिंह को 11-11 तोपों की सलामी दी गई। दरबार के बाद एक विराट जुलूस निकला, स्थान-स्थान पर इत्र पान से सम्मान किया गया और सारे रास्तों में पुष्प वृष्टि हुई व शहर में उल्लास रहा। अजीजनबाई के अनुसार अजीमुल्ला खां वकील, मौलवी अब्दुल रहमान, हुलास सिंह कोतवाल, रहीम खां देशी डाक्टर तथा सभी राजकीय कर्मचारी उपस्थित रहे थे। इसमें घोषणा की गई कि सभी हिन्दू-मुस्लिम मुगल सम्राट के हरे झंडे के नीचे एकत्र होकर अपने धर्म की रक्षा के लिए लड़े।

इधर ब्रह्मावर्त (बिठूर) में भी नाना की पेशवाई की ताजपोशी की तैयारी होने लगी। ज्योतिर्विदों की राय से 30 जून का मुहूर्त नियत हुआ। सायंकाल 5 बजे राज्यारोहण समारोह में नाना को पेशवाई पर आरूढ़ कराया गया। राजपुरोहित ने नाना का तिलक कर रत्नजड़ित मुकुट पहनाया तो नाना के सम्मान में एक बार फिर तोपे गरज उठी और चारों ओर जयघोष होने लगा। इस प्रकार दक्षिण की विनिष्ट पेशवाई उत्तर में बिठूर में पुनर्जीवित हो उठी। इस अवसर पर अनेक जमींदार व प्रमुख लोगों ने नजरें दी और नाना ने अपने अनुयायियों को मुक्तहस्त से पुरस्कार दिए। नाना ने संघर्ष में भाग लेने वाले वीर सिपाहियों को हाथों के लिए सोने के कड़े उपहार में दिए। सर जान ट्रेवेलियन के मुताबिक नानासाहब ने नहर गंग की आमदनी अजीमुल्ला खां को प्रदान की गई। अजीमुल्ला की डायरी के अनुसार बिठूर के मंदिर व घाट गंगा के किनारे सजाये गए थे। इस प्रकार 6 दिनों तक यहां नृत्य संगीत व ब्राह्मण भोज के कार्यक्रम चलते रहे। राज्यारोहण समारोह के समापन पर ब्रह्मावर्त में जुलूस निकाला गया। "हजारों सवार और पैदल आगे चल रहे थे उनके (नाना) आगे तथा पीछे रुहेलों अरबों और सिद्दियों का पहरा था। चौघड़ा बाजे तासे, नगारे श्रंग आदि मंगल वाद्य बज रहे थे। यह शोभायात्रा धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। चोबदार बार-बार पुकारते जाते थे, इतने में रात हो गई, सैकड़ों मशाले जगमगा उठी। बंदनवार तोरण आदि से ब्रह्मावर्त सजाया गया था, नागरिक फूल और दूब बरसा रहे थे। नाना पालकी में बैठे थे और बालासाहब व रावसाहब हाथी पर बैठकर साथ चल रहे थे। इस प्रकार आगे के युद्ध की तैयारी के बजाय आठ- दस दिनों का अमूल्य समय नाच रंग व आमोद-प्रमोद में नष्ट हो गया।

इतिहास के झरोखे से

पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

प्रो. गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

बदायूं (इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति)

उसावां- ऐसा कहा जाता है कि उसावां के निकट का क्षेत्र दैत्यगुरु शुक्राचार्य की तपोभूमि थी। यहां से कुछ दूरी पर पटनाग्राम में (जनपद शाहजहांपुर) एक टीले पर शिवजी का प्राचीन मंदिर है। यहीं पर शुक्राचार्य ने तपस्या की थी बृहस्पति के पुत्र संजीवनी विद्या सीखने यहीं पर आए थे। यहां की देवयानी एवं शर्मिष्ठा का विवाह राजा ययाति से हुआ था। गूरा नबीगंज में एक विशाल खेड़ा है। ऐसा कहा जाता है कि यहां राजा ययाति का महल था तथा विश्वास किया जाता है कि पश्चिम की तरफ देवयानी का महल था तथा पूर्व की तरफ शरमिष्ठा का। गूरा नबीगंज के टीले पर समय-समय पर गुप्तकालीन सिक्के प्राप्त हो जाते हैं। उसावां को पहले उश्नापुरी कहा जाता था। जो बाद में उसावां हो गया।

कोट सालवाहन- इस नाम का इस समय बदायूं का परगना है। ऐसा प्रसिद्ध है कि यहां के राजा सालवाहन उपनाम समुद्रपाल जोगी ने यहां किला (कांट) बनवाया था। यहां अब कोट रतनपुर है तथा टीला अब भी विद्यमान है जहां बरसात में सिक्के प्राप्त हो जाते हैं। निकट ही सिद्ध बरौलिया गांव में एक प्राचीन मंदिर है जहां बहुत बड़ा मेला लगता है। पाडंव कालीन लाक्षागृह ऐसी जन श्रुति है कि पांडवों के रहने के लिए कौरवों ने लाक्षागृह उसावां के समीप बारा गांव में ही बनवाया था। दुर्योधन ने उसको देखने के लिए विदुर महाराज को भेजा। विदुर ने देखा कि इस भवन का निर्माण दुर्योधन ने पांडवों का विनाश करने के लिए कराया है तब आग्रह करके निर्माण करने वालों से ऐसी सुरंग बनवा दी जिसके द्वारा पाडंव बाहर निकल सकते थे। ऐसा ही हुआ। पांडवों के प्रवेश करने के बाद उसमें आग लगवा दी गई, तब पांडव सुरक्षित बाहर निकल गए।

नागाधर्म गुरुओं की समाधियां- राष्ट्र कूट (राठौर) राजाओं के धर्म गुरु, बरमेश्वर-ईसानदेव तथा मूर्तिगन की समाधियां पान दरीबा पटियाली सराय में मंदिर में स्थित हैं। इस स्थान पर प्राचीन काल में उनकी मठिया थी इसी कारण किले के पूर्वी दरवाजे को मढ़ई दरवाजा कहते थे। यह धर्म गुरु सिद्ध पुरुष थे इन्होंने धर्म प्रचार बहुत किया। शिव एवं देवी के अनेक मंदिर बनवाए। इनमें नगला देवी का मंदिर अब भी मौजूद है।

सूर्य कुंड- यह राजा महीपाल ने अपने पिता के पुरोहित पं. सूर्य ध्वज की स्मृति में बनवाया था। इसकी तीन तरफ की सीढ़ियां अब भी पक्की हैं। इसके पास सतियों की समाधियां बनी हुई हैं।

चन्द्रोसर- यह सरोवर राजा महिपाल ने अपनी पत्नी के नाम पर बनवाया था।

सागर ताल- राजा महिपाल ने ही अपने पिता वेनीपाल की यादगार में बनवाया था। इसको वेनीसागर नाम से भी जाना जाता है।

गुरुपुरी चन्दन- यह विनावर के पास है। प्राचीन काल में यहां संस्कृत के आचार्यों का निवास स्थान था। यहां चारों तरफ चन्दन के पेड़ थे।

बेन आवर (बिनावर)- यहां पर राजा वेन का किला (आवर) था। इसको वेन आवर कहते थे। धीरे धीरे नाम परिवर्तित हो गया अव बिनावर कहलाता है।

कछला-चीन काल में गंगा के किनारे कश्यप ऋषि एवं उनकी पत्नी इला का आश्रम गृह था। ऐसी जनश्रुति है कि उसके समीप कश्यप इला ग्राम स्थापित था। जिसका अपभ्रंश कछला है।

कादरचौक

रुहेला कालीन पठान सरदार कादर खां के नाम पर कादरचौक, कादरगंज, कावराबाद स्थापित हुए थे। जिनमें कादरचौक जिला बदायूं तथा कादरगंज एवं कादराबाद जिला एटा में है।

कानसेन की छतरी

बदायूं में कानसेन नाम का एक मोहल्ला है तथा उसैत में कानसैन की छतरी है जहां पर प्रत्येक वर्ष जात लगती है जिसमें बहुत बड़ा मेला लगता है। ऐसा कहा जाता है कि बदायूं के अन्तिम राजा धर्मपाल के पिता का कानसेन वज़ीर था जो कि राजा धर्मपाल की नाजायज़ हरकतों के कारण बदायूं से उसैत चला आया था तथा उसने ज़िन्दा समाधि ले ली थी। उसी स्थान को कानसेन की समाधि कहा जाता है जो कानसेन की छतरी के नाम से भी प्रसिद्ध है।

डॉक्टर विक्टर एगॉन और चित्रकार अमृता शेरगिल

डॉक्टर विक्टर एगॉन ने पूरा जीवन अपने प्रेम को न बचा पाने के अपराध बोध में लोगों की सेवा करते हुए बिता दिया। मैंने डॉ विक्टर एगॉन का नाम अपनी एक परिचित के मुंह से पहली बार सुना था, जो चौरीचौरा क्षेत्र से थीं। उन्होंने बताया था कि वहां के लोग डॉक्टर विक्टर को भगवान मानते हैं, शायद ही कोई घर हो उस क्षेत्र में जिनके घर के बच्चे डॉक्टर विक्टर के हॉस्पिटल में न हुए हों। वहां के लोग अभी भी बस विक्टर को जानते हैं, अमृता को नहीं, क्योंकि उन्हें ये पता ही नहीं कि एक हंगेरियन डॉक्टर वहां क्यों थे? अमृता शेरगिल समय से आगे की चित्रकार थी।

उमराव सिंह मजीठिया को गोरखपुर में चौरीचौरा के पास अंग्रेजों ने जागीर दी थी, जहां उन्होंने सरदार नगर नाम से एक नगर बसा दिया था। वहां सरया गांव में उन्होंने एक चीनी मिल लगाई जिससे लोगों को रोजगार मिला। वहां उनकी महलनुमा कोठियां थी और चूंकि पूरी टाउनशिप थी इसलिए अस्पताल, बाजार सब कुछ था। मजीठिया स्टेट डिस्पेंसरी नाम से हॉस्पिटल था जिसमें डॉक्टर विक्टर ने अपना पूरा जीवन काट दिया। उमराव सिंह ने हंगरी मूल की मारिया एंतोएनेत से शादी की थी, जिससे उनकी दो संतानें हुईं अमृता और इंदिरा। यही अमृता आगे चलकर बहुत बड़ी चित्रकार बनीं जिन्हें लोग अमृता शेरगिल के नाम से जानते हैं।

रश्मि त्रिपाठी
लखनऊ

अमृता बेहद आजाद ख्याल थीं और कई लोगों से उनके संबध थे। शादी के लिए कई अच्छे प्रस्ताव भी उन्होंने ठुकरा दिए और घरवालों के विरोध के बावजूद उन्होंने अपने ममेरे भाई डॉ. विक्टर एगॉन से सन 1939 में शादी कर ली थी। क्योंकि विक्टर ने हर मुश्किल में अमृता का साथ दिया था ये रिश्ता आपसी समझ और विश्वास का था। एक दूसरे को सम्मान देने का था। हंगरी में 1939 में शादी करने के बाद वे दोनो आकर सरया में रहने, जहां अमृता गांवों में घूम-घूमकर चित्र बनातीं और विक्टर ने हॉस्पिटल संभाल लिया था।

दो वर्षों के बाद अमृता का मन यहां से उचट गया और वे यहां से लाहौर चली गईं। जहां अचानक से उनकी तबीयत खराब हुई, डॉक्टर विक्टर ने हर संभव कोशिश की पर 5 दिसंबर 1941 को वे मात्र 28 साल की उम्र में चल बसीं, अमृता की मां ने विक्टर को दोषी माना और विक्टर ये पहाड़ सा गम लेकर वापस सरया लौट आए। और लोगों का इलाज करते हुए जिंदगी काट दी पर कभी किसी से अमृता के बारे में कोई बात नहीं की। हां सरया अमृता का घर था और वो शादी के बाद उनके साथ यहां रहे थे। इसलिए शायद वो उनकी यादों के साथ रहे या उनकेगम के साथ, पर आज सरया के लोग अमृता को नहीं विक्टर को जानते हैं। दस साल बाद उन्होंने दूसरी शादी भी की पर सरया कभी न छोड़ा, सन 1997 में उन्होंने वहां अंतिम सांस ली। वहां लोग बताते हैं कि अगर लोग उनसे पूछते कि आप कभी अपने देश क्यों नही जाते तो वे कहते कि वहां कौन है मेरा? सब कुछ अब यहीं है।

कन्हैयालाल नंदन ने अमृता की जीवनी में लिखा था कि डॉक्टर कहते थे जब मैं और अमृता भारत आ रहे थे तो हमारे पास कुछ जर्मन सिक्के थे जिसे हम लोगों ने समंदर में फेंक दिया था। अमृता पैसों की परवाह कभी नहीं करतीं थीं मेरे पास उनकी स्केच बुक और एक सिल्क साड़ी हमेशा रहती है जिसे वो बहुत पसंद करती थीं।

कन्हैयालाल के अनुसार वे अमृता की यादों के साथ रहते थे, उन्हें सहेज कर रख लिया था उन्होंने। उन्होंने बताया था उनके मरने के बाद उन्हें लगातार ये सपना आता था कि मैं उन्हें रोक रहा हूं और वो मुझसे कह रही हैं मुझे जाना होगा। उस समय अगर एंटीबायोटिक दवाएं होंती तो मैं उन्हें बचा लेता। मैं उन्हें जाते हुए देखता रहा और कुछ न कर पाया।

डॉक्टर विक्टर ने अपने शुरुआती दिनों में हंगरी की वायुसेना के लिए काम किया था। उसकी यूनिफॉर्म पहने हुए अमृता ने उनका पोट्रेट बनाया था। वो हंगरी में ही रह गया था, अमृता के बाद डॉक्टर ने उसे मंगाया पर वो खराब हो गया था तो दिल्ली में किसी आर्टिस्ट से उसे ठीक कराया। कहा जाता है उस समय इस काम के लिए उन्होंने तीन लाख दिए थे उसे। और उस पोट्रेट को आजीवन अपने बिस्तर के सामने लगा कर रखा था। बाद के वर्षों में वे बस लोगों की सेवा में ही लगे रहे पर मुझे नहीं पता इतने महान व्यक्ति के बारे में अमृता से अलग क्यों कुछ नहीं लिखा गया।

शारदा पीठः भारतीय संस्कृति की विस्मृत धरोहर

शारदा पीठ भारतीय उपमहाद्वीप की उन प्राचीन सांस्कृतिक धरोहरों में शामिल है, जो एक समय न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र थी, बल्कि बौद्धिक और शैक्षिक परंपरा की भी महत्वपूर्ण पीठ रही। यह पीठ कश्मीर की नीलम घाटी (आज का पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर) में स्थित है और इसे मां शारदा अर्थात सरस्वती देवी को समर्पित माना जाता है, जो ज्ञान, वाणी और बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी हैं। ऐतिहासिक साक्ष्य बताते हैं कि यह पीठ नालंदा, तक्षशिला और वल्लभी जैसे विश्वविद्यालयों की भांति एक प्रमुख ज्ञानपीठ था, जहां दर्शन, तर्कशास्त्र, वेद, वेदांग, मीमांसा, न्याय, वेदांत और कश्मीरी शैवदर्शन की उच्चस्तरीय शिक्षा दी जाती थी।

रितेश्वर नाथ तिवारी
असिस्टेंट प्रोफेसर

शारदा पीठ का उल्लेख कल्हण की 'राजतरंगिणी' सहित अनेक ग्रंथों में मिलता है। यह स्थान धार्मिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसे 18 प्रमुख शक्तिपीठों में एक माना जाता है, जहां मान्यता है कि देवी सती की दाहिनी हस्तली (अंगुली) गिरी थी। यही कारण है कि यह पीठ न केवल शक्ति उपासना का, बल्कि वैदिक ज्ञान और दर्शन का भी संगम स्थल रहा है।

शारदा पीठ का नाम 'शारदा लिपि' से भी जुड़ा है, जो कश्मीर और हिमालयी क्षेत्र में प्राचीन शिलालेखों और ग्रंथों में प्रयुक्त होती थी। शारदा पीठ की ख्याति इतनी व्यापक थी कि दक्षिण भारत से भी विद्वान यहां अध्ययन के लिए आते थे। कुछ विद्वानों का यह भी मत है कि आदि शंकराचार्य ने यहां शास्त्रार्थ में भाग लिया था। किंतु 1947 के भारत-पाक विभाजन के बाद यह स्थान पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर में चला गया और तभी से यह उपेक्षा और विस्मृति का शिकार हो गया। वर्तमान में यह मंदिर खंडहर में परिवर्तित हो चुका है और भारत के तीर्थयात्रियों को वहां जाने की अनुमति नहीं है। जबकि सिखों के लिए पाकिस्तान में करतारपुर कॉरिडोर की स्थापना की गई है, उसी प्रकार शारदा पीठ के लिए भी 'शारदा कॉरिडोर' की मांग लंबे समय से उठती रही है। इस दिशा में कश्मीरी पंडित संगठनों, हिन्दू धार्मिक संस्थाओं और भारत सरकार के कुछ सांसदों द्वारा पहल भी की गई है।

शारदा पीठ का महत्व केवल धार्मिक या पुरातात्त्विक नहीं है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक चेतना और बौद्धिक स्वतंत्रता का प्रतीक स्थल है। यदि इसका पुनर्विकास, संरक्षण और सांस्कृतिक पुनर्स्थापन किया जाए तो यह स्थल भारत की प्राचीन ज्ञान-परंपरा को पुनः विश्व पटल पर स्थापित कर सकता है। आधुनिक भारत में सांस्कृतिक पुनरुद्धार की जो प्रक्रिया चल रही है, उसमें शारदा पीठ को एक केन्द्रीय स्थान मिलना चाहिए। यह केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि उस भारत की स्मृति है, जहां विचारों की स्वतंत्रता, दर्शन का विकास और ज्ञान का आदान-प्रदान सर्वोच्च मूल्य था। इसलिए शारदा पीठ का संरक्षण केवल अतीत के प्रति श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि भविष्य की सांस्कृतिक दिशा का निर्धारण भी है। यह समय है जब भारत इस विस्मृत धरोहर को पुनः अपनी चेतना में स्थान दे और उसे उसके वास्तविक गौरव के साथ पुनः प्रतिष्ठित करे।

धन सिंह कोतवालः 1857 की क्रांति का विस्मृत नायक

1857 की क्रांति का प्रथम सूरज : मेरठ की धूल भरी गलियों में सूरज डूब रहा था। 10 मई 1857 की वह शाम थी, जब हवा में बारूद की गंध और आजादी की पुकार एक साथ घुल रही थी। धन सिंह, मेरठ की सदर कोतवाली के प्रभारी, अपनी वर्दी में सज्ज, कोतवाली के बाहर खड़े थे। उनके चेहरे पर गहरी चिंता की लकीरें थीं, लेकिन आंखों में एक ऐसी चमक थी, जो किसी बड़े तूफान की आहट दे रही थी। वह पांचली गांव के बेटे थे, एक गूजर योद्धा, जिसके खून में विद्रोह की चिंगारी सदियों से सुलग रही थी।

पांचली की पुकारः-धन सिंह का बचपन पांचली की हरी-भरी खेतों में बीता था। उनके पिता, गांव के मुखिया, अंग्रेजों के जुल्मों के सामने अक्सर बेबस दिखते थे। धन सिंह ने देखा था कि कैसे अंग्रेजों की महलवाड़ी व्यवस्था ने उनके गांव के किसानों को लूट लिया। लगान न चुका पाने की सजा में किसानों को कोड़े पड़ते, उनकी जमीनें छीन ली जातीं। एक बार तो उनके अपने अहाते में एक किसान को अंग्रेजों ने इतना मारा था कि उसकी चीखें धन सिंह के कानों में गूंजती रहीं। उस दिन, एक बालक के मन में विद्रोह की पहली चिंगारी भड़की थी।

राजगोपाल सिंह वर्मा
वरिष्ठ लेखक, आगरा

पांचली के गूजरों में गर्व था। औरंगजेब की मृत्यु के बाद, गूजरों ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अपनी रियासतें कायम की थीं। लेकिन 1803 में अंग्रेजों ने दोआब पर कब्जा कर लिया, और गूजरों की शक्ति को कुचल दिया। धन सिंह के दादा अक्सर सुनाया करते थे कि कैसे उनके पूर्वजों ने कुंजा बहादुरपुर में 1824 में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया था। वह विद्रोह भले ही दबा दिया गया, लेकिन गूजरों के दिलों में आजादी की आग कभी ठंडी नहीं हुई।

सूरजकुंड का साधुः कुछ महीने पहले, मेरठ के सूरजकुंड में एक साधु आया था। उसकी तेजस्वी आंखें और ओजस्वी वाणी ने मेरठ की जनता को मंत्रमुग्ध कर दिया। लोग कहते थे कि वह कोई साधारण साधु नहीं, बल्कि स्वामी दयानंद सरस्वती थे। धन सिंह, अपनी कोतवाली की जिम्मेदारियों के बीच, एक रात चुपके से सूरजकुंड पहुंचे। साधु ने उन्हें देखते ही कहा, "धन सिंह, तुम्हारी वर्दी अंग्रेजों की है, लेकिन तुम्हारा दिल हिंदुस्तान का है। वक्त आ गया है कि तुम अपने लोगों को जागृत करो।" साधु की बातें धन सिंह के मन में गहरे उतर गईं। उन्होंने बताया कि देश भर में एक क्रांति की योजना बन रही है। चर्बी वाले कारतूस और हड्डियों के चूर्ण वाले आटे की अफवाहें सैनिकों और जनता के बीच गुस्सा भड़का रही थीं। धन सिंह को एक जिम्मेदारी सौंपी गई-मेरठ की पुलिस और जनता को इस क्रांति के लिए तैयार करना।

10 मई की वह रातः 10 मई की सुबह मेरठ की छावनी में हलचल थी। सैनिकों में गुस्सा भड़क चुका था। चर्बी वाले कारतूसों के खिलाफ उनका आक्रोश अब विद्रोह में बदल रहा था। दोपहर होते-होते, सैनिकों ने अपने अंग्रेज अफसरों के खिलाफ हथियार उठा लिए। खबर जंगल की आग की तरह फैली, और मेरठ की गलियों में उन्माद छा गया। धन सिंह कोतवाली में थे जब उन्हें खबर मिली। उनकी पुलिस फोर्स पहले से ही दो धड़ों में बंट चुकी थी-एक जो अंग्रेजों के वफादार थे, और दूसरा जो क्रांति के लिए तैयार था। धन सिंह ने चतुराई से काम लिया। उन्होंने अंग्रेजों के वफादार पुलिसकर्मियों को कोतवाली के अंदर रहने का आदेश दिया, ताकि वे क्रांतिकारियों के रास्ते में न आएं। फिर, उन्होंने अपने विश्वासपात्र सिपाहियों को गुप्त संदेश भेजा-आज रात मेरठ की धरती अंग्रेजों के खिलाफ उठ खड़ी होगी।

शाम ढलते ही मेरठ की जनता सड़कों पर उतर आई। पांचली, घाट, नंगला, और गगोल के हजारों गूजर किसान, जिन्हें धन सिंह ने पहले ही संदेश भिजवाया था, हथियारों के साथ मेरठ पहुंच गए। सदर बाजार और कैंट क्षेत्र में क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों की संपत्तियों को नष्ट करना शुरू कर दिया। धन सिंह, अपनी वर्दी उतारकर एक साधारण कुर्ते में, भीड़ के बीच एक प्राकृतिक नेता के रूप में उभरे। उनकी आवाज में वह शक्ति थी, जो लोगों को एकजुट कर रही थी।

रात के दो बजे, धन सिंह ने क्रांतिकारियों को जेल की ओर ले गए। "भाइयो, आज हम उन बंधनों को तोड़ेंगे, जो अंग्रेजों ने हमारे भाइयों पर डाले हैं!" उनकी हुंकार ने भीड़ में जोश भर दिया। जेल के दरवाजे तोड़े गए, 839 कैदियों को आजाद कर दिया गया, और जेल को आग के हवाले कर दिया गया। आजाद कैदी भी क्रांति में शामिल हो गए। मेरठ की गलियां अब आजादी के नारों से गूंज रही थीं।

अंग्रेजों की जांच और धन सिंह का बलिदान

विद्रोह की आग मेरठ से दिल्ली तक फैल गई। लेकिन अंग्रेजों ने क्रांति को कुचलने की पूरी कोशिश की। विद्रोह के दमन के बाद, मेरठ की घटनाओं की जांच के लिए मेजर विलियम्स की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की गई। गवाहियों में धन सिंह का नाम बार-बार आया। कुछ ने कहा कि धन सिंह ने क्रांतिकारियों को खुला संरक्षण दिया, तो कुछ ने आरोप लगाया कि उन्होंने खुद गांवों से क्रांतिकारियों को बुलाया। मेजर विलियम्स ने धन सिंह को मेरठ में क्रांति के विस्फोट का मुख्य दोषी ठहराया। लेकिन धन सिंह तब तक गायब हो चुके थे। कुछ का मानना था कि वे पांचली के जंगलों में छिप गए, तो कुछ कहते थे कि वे दिल्ली में क्रांतिकारियों के साथ शामिल हो गए। लेकिन अंग्रेजों ने पांचली को नहीं बख्शा। 4 जुलाई 1857 को, अंग्रेज रिसाले ने पांचली पर तोपों से हमला किया। गांव को तबाह कर दिया गया, सैकड़ों लोग मारे गए, और 40 से 80 लोगों को फांसी पर लटका दिया गया। गगोल गांव का भी यही हाल हुआ। आज भी गगोल में दशहरा नहीं मनाया जाता, क्योंकि उस दिन उनके नौ बेटों को फांसी दी गई थी।

एक अमर योद्धा की विरासत

धन सिंह कोतवाल का नाम इतिहास के पन्नों में कहीं खो गया। अंग्रेज इतिहासकारों ने 1857 को मात्र एक सैनिक विद्रोह बताया, लेकिन राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने साबित किया कि यह जनता का स्वतंत्रता संग्राम था। और इस संग्राम की पहली चिंगारी मेरठ में धन सिंह ने जलाई थी। पांचली के खेतों में आज भी उनकी कहानियां गूंजती हैं। गांव के बुजुर्ग बताते हैं कि धन सिंह ने न केवल मेरठ की जनता को एकजुट किया, बल्कि गूजरों के उस गौरव को फिर से जगाया, जो अंग्रेजों ने छीन लिया था। उनकी कहानी सिर्फ एक कोतवाल की नहीं, बल्कि एक ऐसे योद्धा की है, जिसने अपने देश के लिए सब कुछ बलिदान कर दिया।